CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्न स्हाड़ा देस

सम्पादक

नीलाम्बरदेव शर्मा : नरेन्द्र खजूरिया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dhan Sara Desh.

धन्न स्हाड़ा देस

देश प्यार की डोगरी, हिन्दी तथा उर्दू
कविताओं का संकलन

सम्पादक
नीलाम्बरदेव शर्मा : नरेन्द्र खजूरिया
Nilambar dev Sharma.

स्कैन्ड/Scanned

ललितकला, संस्कृति व साहित्य अकादमी जम्मू व कश्मीर, जम्मू।
Academy of Art culture and Language-
Jamu and Kashmir
1966

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Acc. No 26750
Cost Rs. 3.26
Date 5.X.66

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

C अकादमी

H 81.1
N 34 D

प्रकाशक

ललितकला, संस्कृत व साहित्य अकादमी जम्मू व कश्मीर, जम्मू ।

मुद्रक

आर० सी० प्रिंटिंग प्रेस, अप्पर बाज़ार, जम्मू

प्रथम प्रकाशन— १९६५-६६

पांच सौ

मूल्य ३ रु० २० पैसे

641
A157
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्न स्हाड़ा देस

जब कभी हमारे देश की स्वतन्त्रता, एकता तथा गौरव को, किसी ओर से भी कोई चुनौती मिली तो इस धरा की कवि-प्रतिभा ने जागरूक होकर सदैव अपनी उज्ज्वल परम्पराओं के अनुरूप जाग्रति तथा उद्‌बोधन का शंखनाद किया है।

सन् १९६२ में नेफा और लद्दाख ने देश के कवियों की साधना को जगाया था। एक आततायी पड़ोसी के कपट-पूर्ण विश्वासघात से समस्त देश चौंक उठा था। कवियों ने उस कठिन घड़ी में देश की आत्मा को संबल दिया था, उसका पथ-प्रदर्शन किया था।

और १९६५ अगस्त-सितम्बर में पुनः जब देश की पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर सीमाओं पर एक घमंडी तानाशाही ने हमारी धरती पर अनुचित हस्तक्षेप करते हुए सहसा दल-बल से आक्रमण कर दिया था तो समस्त देश एक बार फिर पहले की तरह मुकाबले के लिए संगठित हो गया।

देश की सुरक्षा का भार वहन करने वाली भारतीय सेनाओं ने जहां अपनी वीर परम्पराओं को और अधिक उजागर किया वहां देश की कवि-प्रतिभा भी इस संघर्ष में अपना कर्तव्य निभाने में पीछे न रही। गौरव-गीतों से धरा और आकाश गूंजने लगे।

आज हम प्रस्तुत कर रहे हैं डोगरी, हिन्दी तथा उर्दू कवियों की कुछ रचनाएं जो उसी संघर्ष-काल में उन्होंने लिखी-पढ़ी थीं। इस संकलन में डोगरी कविताओं की संख्या अधिक है क्योंकि डोगरी जम्मू-प्रान्त की जन-भाषा है तथा इसमें लिखने वाले साधकों-कवियों की संख्या भी स्वभावतः अधिक है। हिन्दी, उर्दू में लिखने वाले साधकों की कुछ रचनाएं भी दी जा रही हैं क्योंकि उस परीक्षा की घड़ी में सभी भाषाएं एक स्वर में देश गौरव की सुरक्षा के लिए विकल हो उठी थीं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डोगरी

भारत भूमि साढ़ी ऐ : १ : किशण स्मैलपुरी
शान तेरी कित कारी : ३ : किशण स्मैलपुरी
जै बोलो : ५ : परमानन्द अलमस्त
देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो : ६ : परमानन्द अलमस्त
चोलड़ु रंगी दे ललारिया : ११ : परमानन्द अलमस्त
गौरव गैरत दे हीरेंगी : १३ : रामनाथ शास्त्री
अस अपनी पुन्न धरती दा
नमां शृंगार करने आं : १५ : राम राथ शास्त्री
जै जै जवान, जै जै कसान : १८ : राम नाथ शास्त्री
दूर अजें ते मंजल साथी ! : २० : केहरिसिंह 'मधुकर'
ए धरती : २६ : केहरिसिंह 'मधुकर'
आस्था : ३० : केहरिसिंह 'मधुकर'
मेरा कैसा सोहना देस ! : ३४ : शम्भुनाथ शर्मा
तेरै कुरबान सपाइया ! : ३५ : शम्भुनाथ शर्मा
चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ : ३८ : मोहनलाल स्पोलिया
तेरी फौजिया बरदी : ४० : मोहन लाल स्पोलिया
ए भारत अमर ऐ : ४२ : मोहन लाल स्पोलिया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज बोलो : ४४ : यश शर्मा
सूरमे लड़ने गी जा करदे : ४७ : यश शर्मा
निश्चा : ५० : चरणसिंह
अज्ज कलम कटारी कर कविया : ५४ : चरणसिंह
चतावनी : ५६ : रामलाल शर्मा
हिरख तन्दें गी असें त्रोड़या नईं : ६२ : रामलाल शर्मा
गीत मेरा इकला नईं : ६४ : वेद 'दीप'
अस भारती : ७० : तारा स्मैलपुरी
ए ऐ हिन्दोस्तान : ७५ : तारा स्मैलपुरी
ए वेल्ले रोज नईं औंदे : ७७ : नरसिंह देव
गीत : ७६ : नरसिंह देव
ए वेल्ला : ८१ : वरकत प्हाड़ी
डोगरी गीत : ८५ : दुर्गादत्त शास्त्री
सम्हल सुरत कर : ८७ : बालकृष्ण चंचल' उधमपुरी
किन्द : ८६ : रामलाल पपीहा
ललकार : ६१ : मोहनलाल मित्तर'
जुग-जुग दीप जलै : ६३ : सुतीक्ष्णकुमार आनन्दम

हिन्दी

कश्मीर : ६७ : आर० सी० प्रसादसिंह
पावन भूमि : ६६ : सव्यसाची
देश की जय : १०१ : शेरजंग गर्ग
चलो आरती हम उतारें वतन की : १०३ : मोहन निराश
जय वीरों की जन्म भूमि : १०५ : शकुन्तला सेठ
प्रयाण-गान : १०८ : पृथ्वीनाथ मधुप
जागता हुआ केसरी : ११० : बलजिन्नाथ पण्डित

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केसरी गाथाऐं : ११२ : श्यामदत्त 'पराग'
ध्वंस और सृजन : ११४ : दुर्गादत्त शास्त्री

उर्दू

वतन : ११६ : नरसिंह सहाय शौक़
नामूसे वतन की खातिर : १२० : तालिब एमनाबादी
तेरी अज़मत की क़सम : १२२ : महेन्द्र रैणा
वतन के नौजवानों के नाम : १२४ : अर्श सहबाई
ऐ मादरे हिन्दोस्तां : १२६ : आविद मुनावरी
सरहद के मुहाफिज़ : १२८ : विजय सुमन
ऐ मादरे हिन्दोस्तां : १३० : ज़ैड सैमी
हम एक रहेंगे : १३२ : कुमार ज्योतीश्वर पथिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डोगरी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत भूमि साढ़ी ऐ

किशण स्मैलपुरी

ए भारत भूमि साढ़ी ऐ।
ए भारत भूमि साढ़ी ऐ॥

जिसदी मित्ती[1] जलबायु थों[2]
गौतम ते नानक उट्ठे हे,
प्रताप, शिवाजो उट्ठे हे,
गाँधी ते चानक उट्ठे हे,
जिसदी मित्ती दा ए कण-कण
कोहनूरै गी शरमा करदा,

ए भारत भूमि साढ़ी ऐ।
ए भारत भूमि साढ़ी ऐ॥

---

1. मट्टी 2. से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गंगा जमना ते ब्रह्मपुत्तर,
नित जिसदा मंगल गांदे न,
कैलाशराज जिस धरती दी,
जरमें थों[3] शान बदांदे न,

ओ भारत भूमि साढ़ी ऐ।
ओ भारत भूमि साढ़ी ऐ॥

अस रत्त[4] ते परसा जिस पिच्छें-
अपना अज्ज बगा करनें,
अस जिसदी लाज बचाने गी
अपना सरबस्स[5] लटा करनें।
जिसदी रक्षा दा प्रण स्हाको,[6]
अज्ज सीमा पार बुला करदा।

ओ भारत भूमि साढ़ी ऐ।
ओ भारत भूमि साढ़ी ऐ॥

★★

---

3. जन्म से लेकर 4. रक्त [लहू] 5. सर्वस्व 6. हमको

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शान तेरी कित कारी !

किशण स्मैलपुरी

●

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

जिस देसै दियां लुट्टनां एं मौजां,
बनी - बनी कृष्ण मुरारी,
गोकल रूपी उस धरती दा
तूं नईं प्रेम-पुजारी, ओ मित्तरा !

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

देसै हित सरबस्स लुटांदे,
योधे शस्तर धारी ।
तूं दिनें - रातीं खीसे भरना एं[1]
करी करी चोर बजारी, ओ मित्तरा !

---

1. जेबें भरते हो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

देसै उप्पर चढ़ी चढ़ी आया,
दुशमन अत्याचारी ।
तूं इक बारी अगड़े बदियै,[2]
बैरी फौज नि मारी, ओ मित्तरा !

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

उयै अमर शहीद खुआए[3],
उयै प्रेम पुजारी ।
देसै हित जिन्हें सीस कटाइयै,
लुट्टी लेई सरदारी, ओ मित्तरा !

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

ईन[4] गै शक्ति, ईन गै भगती,
ईन गै राज-हितकारी ।
छुट[5] ईना कदें देस नि सौरे[6],
उजड़े सौ-सौ बारी, ओ मित्तरा !

शान तेरी कित कारी ओ मित्तरा, शान तेरी कित कारी ?

★★

---

2. आगे बढ़ कर 3. कहलाए 4. गैरत 5. बिना
6. सुधरे, [फले-फूले]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जै बोलो

परमानन्द अलमस्त

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।
झांसो दी मरदानी दी जै,
जै परतापी राणे दी ।

जै शेवा मरहट्टे दी जै,
जे जै कलगी आलें दी ।
चोका अन्दर धर्मा खातर,
सीस कटाने आलें दी ।
जै जै अजीत जुझारै दी जै,
निक्के-निक्के जानें दी[1] ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

---

1. नन्हें बच्चों की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गज्जो-ब्रज्जी[2] बोलो जै जै,
तलियें सीस टकांदे जो[3] ।
कौमा, धर्मा देशा गित्तै,
अपनीं जिन्द मुहांदे[4] जो ।
जै नेता दी, भगत सिंह दी,
आजादी दे परवानें दी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

इस्सै प्यारी जादी गित्तै,
तिलकै[5] नारा लाया हा ।
हक़ पदैशी हक़ ऐ साढ़ा,
डकै चोट गलाया[6] हा ।
बापू, चाचू दा फरमाना,
हकूमत बुरी बगानें दी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

परबस्सी[7] दे जीनें कोला,
अजादी दा मरना चंगा ।
मंदा ऐ, मंदा ऐ सरवर,

---

2. ऊंचे स्वर में [गरज-तरज कर] 3. जो सीस तली पर रखते हैं
4. बलि करते हैं 5. बालगंगाधर तिलक 6. कहा
7. परवशता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तौक गुलामी ऐ मंदा ।
आजादी गी सांबी रखना,
शान कुसै मरदाने दी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

जै देसै दे राखें[8] दी जै,
डोडो नेह बलकारें[9] दी ।
जै जोरावर, हुश्यारै दी,
सरहदी पहरेदारें दी ।
जै जरनैलें - करनैलें दी,
लफटैनें दी कप्तानें दी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

ताईं[10] दिक्खें कैरी अक्खीं,[11]
उसदी अक्ख गै कड्डी लौ[12] ।
अगड़ा पैर बदा जे बैरी,
लत्त गै उसदी बड्डी लौ[13] ।
भारत मां दे लाल बहादर,
कीतो चोट नशानें दी ।

जै बोलो जै बोलो रलियै
बोलो बीर जवानें दी ।

---

8. *देश के रखवालों की* 9 *बलशालियों* 10. *इधर*
11. *मैली आंखों से* 12. *उसकी आंख ही निकाल लो*
13, *उसकी टांग ही काट लो*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ख बन्दना उनें जवानें,
सेवर जैट डगाए जिनें ।
कीते पैटन टैंक नकम्मे,
मान चक्की[14] पाए जिनें ।
जै सूरमे हमीदा दी जै,
सच्चे मुसलमाना दी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
बोलो बीर जवानें दी ।

अलमस्तो, बदमस्तो, उट्ठो,
बेल्ला नईं जे सौने दा ।
हल्लां बाग्रो, अन्न उगाग्रो,
समां नि बेल्लै रौहनें दा ।
भुक्खमरी गी देसा कड्डो,
अरज करां करसानें गी ।

जै बोलो, जै बोलो रलियै,
जै बोलो वीर कसानें दी ।

★★

14, वीरचक्र

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो

परमानन्द अलमस्त

●

देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो,
झंडा रंगा - तरंगा लहरान्दे चलो !

सब्बै[1] बस्सनेयां इस्सै दी छत्तर छां,
हिन्दू ते सिख, ईसाई, मुस्लमां ।
जोत, अमनै दी जोत, जगांदे चलो !!
देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो,
झंडा रंगा - तरंगा लहरान्दे चलो !!

देस भारत ऐ अमन पुजारिएं दा,
सच्चे बादशाह नानक निरंकारियें दा,
जयकार सतश्री अकाल बलादें चलो ।

---

1. सब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो,
झंडा रंगा - तरंगा लहरान्दे चलो ।।

मेटी[2] अपनी दुबधा नाचाकिएंगी,
फिरकापरस्तियें ते नाचाकिएं[3] गी ।
डंका प्रेम - प्रीतै दा बजांदे चलो !!
देस अलमस्ता दा मालो माल होयै,
हर गल्ला'च खुद कफैल होयै ।
जियां बस्सै इसी बसांदे चलो,
देस प्यारै दे गीतें गी गांदे चलो !
झंडा रंगा - तरंगा लहरान्दे चलो !!

★★

2. मिटाकर 3. नाराजगियों को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोलड़ु रंगी दे ललारिया !

परमानन्द अलमस्त

●

चोलड़ु[1] रंगी दे ललारिया !
रंगण रंगेयां वीरता रंगणें,
केसरी केसर केयारिया,
चोलड़ु रंगी दे ललारिया !!

रणरत्ते जौहर रणैं'च दसदे,
जान नि करन प्यारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया !!

सच्चड़े[2] देस प्यारैं'च मत्ते दे,
आजादी पीन खुमारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया !!

---

1. चोला 2. सच्चे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो रंग रंगेया रंग मजीठड़ें,[3]
रंगण ए रंगण न्यारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया !!

रंग शहीदें दे रंग रंगीलड़े,
तजदे मोह संसारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया ।।

आजादिया बास्तें तन मन बारदे,
बारदे बारिया - बारिया[4] ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया ।।

जोगिया गेरुया, फक्कर फकीरें दा,
रंगण ए रंगण निरंकारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया ।।

जेकड़ा भौंदा[5] मन ओकड़ा[6] रंगी दे,
अलमस्ता ने अर्ज गुजारिया ।
चोलड़ु रंगी दे ललारिया !!

★★

---

3. सुर्ख 4. बारी-बारी से 5. जो माता 6. वही

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौरव गैरत दे हीरेंगी

रामनाथ शास्त्री

●

धरती जे करजा[1] मंगै तां - ओ करज चुकाना पौन्दा ऐ[2] ।
आदर्शें लेई बलिदानें दा - इक परब[3] रचाना पौन्दा ऐ ।

देसै पर बिपता आई जा तां, कोई बैरी अनख जगाई जा तां,
धरती दा मान बचाने लई-देसै दी शान बचाने लई,

देसै दे गबरू बीरें गी,
गौरव गैरत दे हीरेंगी,

दुर्गा रणचंडी माता दा-जैकार जगाना पौन्दा ऐ,
धरती जे करजा मंगै तां-ओ करज चुकाना पौन्दा ऐ ।

आदर्शें लेई बलिदानें दा .....

---

1. ऋण 2. पड़ता है 3. पर्व

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस ममता ने गल लाया ऐ–जीवन-अमरत पलेआया ऐ ।
उस ममता गी जे ललकारै–कोई जाबर पाप जे बंगारै,

देसै दे गबरू बीरेंगी,
गौरव - गैरत दे हीरेंगी,

ओ पाप मसाना पौन्दा ऐ–जाँ आप मटाना पौन्दा ऐ !
धरती जे करजा मंगै तां–ओ करज चुकाना पौन्दा ऐ ।
आदर्शें लेई बलिदानें दा.....

अस पूजने आं जिस प्रीतैगी–कोई टोकै जे उस रीतै गी,
ओ प्रीतै दा संसार कदें–मुल्ल मंगै लक्ख-हजार कदें,

देसै दे गबरू बीरें गी,
गौरव - गैरत दे हीरेंगी,

सौ बारी, सीस कटाइयै बी–ओ मुल्ल चकाना पौंदा ऐ,
धरती जे करजा मंगै तां–ओ करज मकाना पौंदा ऐ ।
आदर्शें लेई बलिदानें दा–इक परव रचाना पौंदा ऐ ॥

★★

.....

---

4. ग़ैरत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस अपनी पुन्न धरती दा नमाँ शृंगार करने आँ !

रामनाथ शास्त्री

●

असेंगी अपनें देसै पर बड़ा अभिमान ऐ साथी !
ए स्हाड़ा[1] मुक्ति - मंदर ऐ, ए स्हाड़ा मान ऐ साथी !
इदी गैरत, इदी इज्जत गै स्हाड़ा प्राण ऐ साथी !

इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं,
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं ॥
अस अपनी पुन्न[2] - धरती दा नमां शृंगार करने आं !!

बदलदी रुत्त लेई औन्दी कदें गरमी, कदें सरदी,
ते इस चाली गै धरती दी ए कहानो रूप कई धरदी,
कदें लामें दा दम भरदी, कदें अमनै दी चाह करदी ।

---

1. *हमारा* 2. *पुण्य*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इदा हर हुक्म सिर - मत्थै लेई, जैकार करने आं !
इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं ।
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं ।।
अस अपनी पुन्न - धरती दा नमां शृंगार करने आं !!

अजादी, ईन, मरजादा दे अस आं सारे मस्ताने,
सचाई, न्याँ, धरम - जोतें दे आं मुंडा थों परवाने,
बीरें दे पुजारी आं, अमन दे गीत बी गानें,

मनुक्खें दी[3] मनुक्खता दा बड़ा इतबार करने आं ।
इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं ।
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं ।।
अस अपनी पुन्न धरती दा नमां शृंगार करने आं ।।

फलोरा, छम्ब, डुगराई ते बरकी पर लखोई ऐ,
ओ क्हानी अपने इतिहासै दा सुच्चा अंग होई ऐ,
नमें भारत दे गौरव गी नमीं इक किरण थोई ऐ,

ते हुन अमनै दे फुल्लें दा इसी उपहार करने आं !
अस अपनी पुन्न धरती दा नमां शृंगार करने आं !!
इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं,
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं !!

---

3. *मनुष्यों की*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असें सन्तें दी बाणी दा ऐ अमरत - सार पीते दा,
असें यारें गी, सज्जनें गी, गलै दा हार कीते दा,
हिरख - तागें'नें चित्तें दा असें लंगार सीते दा,

ते अस उज्जड़े दे बागें बी बसन्ती ब्हार करने आं !
अस अपनी पुन्न - धरती दा नमां शृंगार करने आं ।
इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं ।
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं ।।

नमां बचपन, नमीं ममता नमां जोवन कुआरा ऐ,
नमें औंकर, नमीं कलियें गी स्हाड़ा पक्क स्हारा ऐ,
नमें गीतें, नमीं भाखें दा स्हाड़े अल्ल शारा[4] ऐ ।

इनें निरमैल रंगेंगी सदा थों प्यार करनें आं ।
अस अपनी पुन्न धरती दा नमां शृंगार करने आं ।

इदी खातर ए तन - मन -धन बी अस बलिहार करने आं,
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं ।।

पजेबें दी छनक, चूड़ें दी सूई रौंस बलगै दी,
दनासें, कुंडलें, सुरमें दी भोली हौंस बलगै दी,
गिल्लुयें दी[5] रुस्सने,[6] ते बिलने दी ऐ धौंस बलगै दी,

इनें रौंसें, ते हौंसें पर कई लामां नसार करने आं !
अस अपनी पुन्न - धरती दा नमां शृंगार करने आं ।।
इदी खातर ए तन - मन - धन बी अस बलिहार करने आं,
इदी खातर अमन - गीतें दी अज्ज गुंजार करने आं !!

★★

---

4. इशारा 5. बच्चों की 6. रूठने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जै जै जवान, जै जै कसान

रामनाथ शास्त्री

●

इक, ईन ते गैरत दा राखा
आजादी दा परवाना ऐ !
इक, अमन दे गोतें दा प्यासा
जो मिहनतें दा मस्ताना ऐ ।
देसै दे दोऐ गौरब न,
दौनें करी देस सुहाना ऐ ॥

जे सोगे[1] चातर दोऐ न–
तां रवै सदा गै अमन-(अ)मान ।
जै - जै जवान, जै - जै कसान ॥

---

1. होशियार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देसै दी बाग बहारें दे
ए दोऐं सोगे रखबाले,
इक राखी करदा ऐ चौकस,
दुए ने रौंसले फुल्ल पाले,
इक रोकै अन्धी ते झक्खड़
दूए ने दीपक न बाले,

दोऐ देसै दियाँ दो अक्खीं
दोऐ देसै दे ईन - मान ।
जै - जै जवान, जै - जै कसान ।।

इक रणभूमि दी क्यारी'च–
गैरत दियां फसलां राहन्दा ऐ,
इक खेतर - खेतर फसलें दे–
गीतें दे ताल जगान्दा ऐ ।
इक जीवन - दाता, अन्न - पति;
इक जीवन ढंग सखान्दा ऐ,

जीवन - गीतै दी सरगम दे–
ए दोऐं सुन्दर ताल - तान,
जै - जै जवान, जै - जै कसान

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूर अजें ते मंजल साथी !

केहरिसिंह 'मधुकर'

●

दूर अजें ते मंजल साथी, अजें दुरांडे[1] पैंडे'न[2] ।
आ करचें अजें राहिया हिम्मत, अगड़ा कदम बधानें दी ।।

साढ़े इस देसै दी गैरत,
ए गैरत सिरवारें दी ।
ए रत्तू दी कत्थ पुरानी,
ए कृहानी तलवारें दी ।।

ए ममता दी सीरें कन्नैं,
मामैं बन्न'न बन्ने दे ।
अनगिन पारवतियैं सीतैं
इस लेई चूड़े भन्ने[3] दे ।।

---

1. लम्बे-कठिन 2. रास्ते 3. सुहाग-सूचक चूड़ियां तोड़ी हैं (वैधव्य स्वीकार किये हैं)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोली - भाली भैनै इस पर,
रक्खड़ियें गी वारे दा ।
भोले - भाले जाणें दे,
हौकारें इसी संगारे दा ।।

खीर[4] स्वास तगर रे लड़दे,
जो अपनी संतानें लेई ।
अज्ज असें लड़ना पौना,
उनें अपने देस–दिवानें लेई ।।

हर शैल सपुत्तर माता दा, सीरें[5] दा मुल्ल चुकान्दा ऐ,
सीरें दा मुल्ल चुकाना गै, बस रीत इनें सन्तानें दी ।
दूर अजें ते मंजल साथी, अजें दुराडे पैण्डें'न ।
आ करचै राहिया अजें हिम्मत, अगड़ा पैर बधाने दी ।।

युग सदा रेआ ए लामें दा,
युग सदा रेआ तलवारें दा ।
युग सदा रेआ ए ताकत दा,
दो चार करारे वारें दा ।।

हर बेल्लै जीने दी कीमत,
इक तगड़ा वार कटारा दा ।
जो देश पिड़ें बिच डटदा नईं,[6]
कदूं अंग रेआ संसारा दा ।।

---

4. आखीरलें (अन्तिम) 5. युद्धों का
6. समर-भूमि में डट कर खड़ा नहीं होता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देसै दी गैरत उन्नी[7] गै,
जिन्ना पानी तलवारें'च ।
देसै दा मान ते मरयादा,
चमकै उसदे हथ्यारें'च ।।

ए सारी खेड समें दी ऐ,
ए मानु खेडन हारा ऐ ।
जो साथ समें दा नईं दिन्दा,
कदूं उसदा पार तोआरा[8] ऐ ।।

ए देन समें दी हर इक गी, सिर मत्थे लैना पौन्दियै ।
उसी समा के समझै, जो नईं समझै सार जमाने दी ।
दूर अजैं ते मंजल अपनी, अजैं दुराडे पैण्डे'न ।
आ करचै राहिया अजैं हिम्मत, अगड़ा पैर बधाने दी ।।

सब मनदे'न बिन लाउआ दे,
ए भुज कदैं बी हसदी नईं ।
सब मनदे'न बलिदानै बिच,
ए धरती रसदी बसदी[9] नईं ।।

इतिहास सुनान्दा आया ऐ,
मोए बिन जीवन थोन्दा नईं ।
जे जोत लड़ै नईं न्हेरें'ने
तां कदैं सवेरा होन्दा नईं ।।

---

7. उतनी ही 8. पार उतरना (किनारे लगना)
9. यह धरती फलती-फूलती नहीं

26730

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फी लाज बचाना पौन्दियै,[10]
भैनें दे अमर सुहागें दी ।
हां, लाज बचाना पौन्दियै,
ममता दे कोमल भागें दी ॥

केईं बारी बिजन पराधें[11] बी,
सूली पर चढ़ना पौन्दा ऐ ।
इस जोर जुलम दी ज्वाला'च,
मुस्कान्दे सड़ना पौन्दा ऐ[12] ॥

करना पौन्दा ऐ वीरें गी, धन, मन, तन अर्पण देसै लेई,
ओ जोर-जुआनी के करनी, जो सोचै आप बचाने दी,
दूर अजैं ते मंजल साथी, अजैं दुराडे पैण्डे'न ।
आ करचै राहिया अजैं हिम्मत, अगड़ा पैर बधाने दी ॥

अज देसै दै बन्नें - बन्नें,
डटी जुआनी देसै दी ।
अज देसै दे जाए पालन,
रीत पुरानी देसै दी ॥

काला पैसा, काला धन्धा,
काला कम्म गद्दारें दा ।
ए देसै दे दुश्मन रोकन,
रस्ता पहरेदारें दा ॥

---

10. *पड़ती है* 11. *अपराध किए बिना* 12. *जलना पड़ता है ।*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए देसै दा बच्चा - बच्चा,
सोचै करदा मरने दी ।
इनैं गद्दारैं सलगो दो,
अज्ज बी अपने घर भरने दी ।।

खबरदार देसै बिच रेइयै,
देसै'नै धरो करदे ओ ।
मुलख तरसदा दाने-दाने लेई,
तुस कोठे भरदे ओ ।।

नफा खोर ए नाज चोर, सब दुश्मन वैरी देसै दे ।
जागो हुन ते सोच करो इन्दे थों जिन्द छुड़ाने दी ।।
दूर अजैं ते मंजल साथी, अजैं दुराडे पैण्डे'न ।
आ करचै राहिया अजैं हिम्मत अगड़ा पैर बधाने दी ।।

देस कदैं नईं इतिहासें,
दे स्हारैं जोन्दा रौह्न्दा ऐ ।
हर बेल्लै हर मानु गी,
किज़'न किज[13] करना पौन्दा ऐ ।।

बिन अपना स्वार्थ छोड़े दे,
देसै दे भाग निं हसदे'न ।
जयकारे, नारे लाने'नै,
उजड़े दे थे[14] निं बसदे'न ।।

---

13. कुछ न कुछ 14. उजड़े हुए निवास स्थान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थाह[18] लैचै अपने आपै दी,
जे पार तोआरा[19] करना ई ।
कक्खें दी बेड़ी के करनी,
जे मारू[20] सागर तरना ई ।।

अज कसम असें देसै दे,
व्हादर बीरें मस्तानें दी ।
पिछलें दी नईं, अपनी बी नईं,
किज सोच करो संतानें दी ।।

पिच्छला कल बेशक साढ़ा नईं, पर अगला कल ते साढ़ा ऐ ।
इतिहास जगीर कुसै दी नईं, ए कहानी ऐ बलिदानें दी ।।

★★

---

18. थाह लें 19. आत्म-कल्याण 20. तूफानी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए धरती

मधुकर

●

ए धरती अत्त[1] प्यारी ऐ ॥
मानु दी निर्मल कायां[2] एं ।
स्वासें बिच प्राण चिङ्गारी ऐ ॥

इसदी नदियें दी जलधारा, मानु दी जीवन - धारा ऐ ।
ए कलि - कलि बिच प्राण खिड़े, हर ओंकर बिच बिस्तारा ऐ ।
जंगल - जाड़ें दी रौंसें[3] बिच, होखो ऐ अमर प्यारें दी ।
इस दे कण - कण बिच मुस्कान्दी, आसें दी स्होल क्यारी ऐ ।

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिङ्गारी ऐ ॥

---

1. अति 2. काया 3. हरियाली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जंगल - जाड़ें, पर्वत, नदियें दी निक्की नेई[4] ए कहानी ऐ,
पर हर इक सुच्चे मानु दे निश्चें दी ए महारानी ऐ ।
ए 'देश' शब्द बेशक निक्का, पर अर्थ बखानै कुन इसदा ?
रोम - रोम बिच रची गेई दी, इस दी महमा भारी ऐ ।

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिङ्गारी ऐ ॥

ए रंग - बरंगी ब्हारें दे, सब मस्त नजारे एदे'न ।
बे - सम्ब[5] निखरदी सुन्दरता, मद - मस्त ईशारे एदे'न ।
जल-थल इसदे, फल-फुल्ल इसदे, धन-धान भरोचा अंगन ऐ ।
नाजें दे[6] खेतर हसदे'न, सब इसदी लीला न्यारी ऐ ।

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिंगारी ऐ ॥

अनगिन भावें दे दीएं दी, जोतें दा चानन न्यारा ऐ ।
मानु दी उज्जल आशा दे, ए विश्वासें दा स्हारा ऐ ।
मित्ती दी ममता दे धागें, ए जाल बुने इतिहासें दे ।
मित्ती दी प्रीता दी डोरें, बज्जी दी दुनियां सारी ऐ ।

---

4. छोटी सी 5. अनगिनत 6. अनाजों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिंगारी ऐ ।।

हर जोर-जबर दी न्हेरी गी, हर कौम डटीऐ जरदी ऐ ।
औने आली संतानें लेई, बलिदानी चानन करदी ऐ ।
मित्ती दी खातर लड़दा जो, ओ अपनी खातर लड़दा ऐ ।
तन, मन, धन सब बलिदान करै, बस इन्नी गल्ल बचारी ऐ ।

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिंगारी ऐ ।।

अनगिन महाभारत होए'न, सिंगार बने इतिहासें दा ।
ए मानु रत्तू 'नै बालै दीपक अपने बिश्वासें दा ।
अपने जन्मां दी भूमि 'नै, मानु इस चाली बज्जे दा ।
हर प्रीत, हिरख, आसा, ममता, इस रिश्ते अग्गें हारी ऐ ।

ए धरती अत्त प्यारी ऐ ।
मानु दी निर्मल कायां ऐ ।
स्वासें बिच प्राण चिंगारी ऐ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमना दी राखी करने लेई, तलवार सदा प्रधान रेई।
अमना दी खातर लड़ना बी, मानु लेई म्हेशां[7] शान रेई।
अस बी इस मित्ती दे जाए, सदियें दी घास नवा करनें।
हर मानु मेरी पीढ़ी दा, इस धरती पर बलिहारी ऐं॥

ए धरती अत्त प्यारी ऐ।
मानु दी निर्मल कांयां ऐं।
स्वासें बिच प्राण चिंगारी ऐ॥

★★

---

7. सदा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आस्था

केहिरी सिंह मधुकर

जदूं बी, जो कोई, जिसलै कदें बलिदान करदा ऐ,
तां ओ अपना नईं, सरवत दा कल्यान करदा ऐ ॥

गरम इक बूंद लहुआ दी,
जदूं धरती 'नै लगदी ऐ ।
नमां जोवन[1] चमकदा ऐ,
नमीं तकदीर जगदी ऐ ।
सुरख लहुआ दी लाली 'नै,
सदा धरती शंगारी ऐ ।
म्हेशां मौत हारी ऐ,
कदें[2] हिम्मत नि हारी ऐ ।

---

1. *नया योवन* 2. *कभी*

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिखै जिसलै कोई जोधा नमीं कहानी कटारा 'नै ।
समां उसलै नमें इतिहास दा निर्माण करदा ऐ ।।

अमन दा, शान्ति दा,
बस दना भर[3] सा' घटोन्दा ऐ ।
होऐ झंकार तेगें दी,
विजय-संगीत थोन्दा ऐ ।

जिनैं मानु दी[4] खातर,
प्राण दित्ते, मान दित्ता ऐ ।
उनैं मरियै मनुक्खता गी,
गै जीवादान दित्ता ऐ ।

उनें ब्हादर सपूतें दा, उनें भारत दे जाएं दा ।
समूचा देस ए मेरा झुकी संमान करदा ऐ ।।

जिनैं अजादिया दे
दीपकें बिच प्राण बाले 'न ।
उनैं मौती दे न्हेरें 'च,
भरे जीवन उजाले 'न ।

---

3. क्षणभर 4. मनुष्य की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनै सरबस बारे 'न,
मिली तां आस देसै गी।
इनें दीएं थ्वां[5] मिलेआ,
मुड़ि[6] परकास[7] देसै गी।

इनें ओठें दा ए हासा, इनें नैनें दी ए जोती।
इनें स्वासें दा ए सरगम सदा गुणगान करदा ऐ॥

मेरी माता नि तूं रोऐआं[8],
कैं खिलरे[9] बाल तेरे 'न।
तेरे इक लाल दै बदलै,
ए सारे लाल तेरे 'न।

मेरे बापू बढ़ेपे दे,
तूं कैसी नीर बारे 'न।
मेरे देसै दे ए गबरू,
तेरी उमरी दे स्हारे 'न।

होई दिलगीर कैं[10] भैनें, तेरे ब्हादर सुहागा पर।
ए जाती गर्व करदी ऐ, जमाना मान करदा ऐ॥

---

5. से 6. फिर 7. प्रकाश 8. रोना 9. बिखरे
10. क्यों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे अज गीत जागे 'न,
सुरें गी फी सम्हालै 'दे ।
नमीं बत्तें दे चानन लेई,
नमें दोएं गी बालै 'दे ।

नमीं अज चेतना जागी,
नमें अरमान जागे 'न ।
नमें भारत दी गोदै 'च[11],
नमें इनसान जागे 'न ।

इनें गीतें दे सरगम 'नै, इनें गीतें दी मस्ती 'नै,
कवि तांगां जगाने दा नमां सम्यान करदा ऐ ॥

★★

11. गोदी में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरा कैसा सोहना देस !

शम्भु नाथ शर्मा

●

कैसा बांका देस ऐ मेरा, कैसा सोहना देस !
मानु ब्हादर, हिरखै दे गाहकी,
छल-छिद्दर[1] मन मैल नि पाखो[2],
सादमसादे भेस, ए मेरा कैसा सोहना देस !

धारें दे नीले-नीले कंगन,
आपू''चें हीले करी-करी लंगन,
सौ-सौ पान पलेस,[3] ए मेरा कैसा सोहना देस !

बकरू - छिल्लड़ू चारन नारां,
मिट्ठिये टारें गूंजन धारां,
भोली-भाली बरेस, ए मेरा कैसा सोहना देस !

★★

---

1. छल-कपट 2 जानी 3. घेरे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरै कुरबान सपाइया !

शम्भु नाथ शर्मा

तेरै कुरबान सपाइया, में तेरै सदकै जां।
तेरे नामे नै गै उच्चा मेरे देसै दा ऐ नां ॥

तूं ओ स्हारा एं जिसी देसै दा अभिमान थोआ,
तेरे बलिदानें गी बलिदानें 'च सन्मान थोआ ।
जींदे जी औख[1] ते रेई, मरियै न्हेआ[2] मान थोआ,
मरदी दुनियां ऐ, कुसै दुए गी ओ मिलया नि थां ।
तेरै कुरबान सपाइया, में तेरै सदकै जां ॥

देसै हित जीना, कमाना ते इदे लेई मरना,
सैकड़े दुख ते मसीबत ते कसाले जरना,
प्राणें दी बाजी नै ईनै दा[3] सौदा करना,
के करां सिफत तेरी, के - के गुण गां ।
तेरै कुरबान सपाइया, में तेरै सदकै जां ॥

---

1. *कठिनाई* 2. *ऐसा* 3. *ग़ैरत का*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुगी सीतै ने जां गरमीं ने, निं घबराया कदें,
स्होने 'शा स्होने नजारें बी निं भरमाया कदें,
साकें - नातें दे बछोड़े नै निं तरसाया कदें,
तेरा नाता, तेरा रिश्ता ऐ तेरा फर्ज जतां[4]।
तेरें कुरबान सपाइया, में तेरें सदकै जां ॥

तूं ओ जोगी एं जिसी भुक्ख - तरे निं लग्गै,
तूं ओ भोगी एं जिसी भोग निं दुआ ठग्गै,
ओ अटल जोत एं जिसी बाह[5] बी निं डरदी लग्गै,
लड़ बचाइयै गै सदा लंगै कदें लंगै बी तां।
तेरें कुरबान सपाइया, में तेरें सदकै जां ॥

तोपें तलवारें बन्दूकें नै तूं रोहलां करनां,
तेरा चाह मौतो नै हर बेल्लै कलोलां करनां,
मौतो 'शा बदियै तूं किश मौतो नै च्होलां[6] करनां,
चाह तेरा चुकदा जे, जिंद लैन्ना एं, जिंद दिन्ना एं तां।
तेरें कुरबान सपाइया, में तेरें सदकै जां ॥

तेरी रत्तु ने बरफ हमाला दी जाई रंगो,
बलदे रणकच्छ दे बरेतें बी निं पाई तंगी,
तुगी राम्मैगी[7] सदा लगदी ऐ खाई चंगी,
गोलिएं – गोलें – संगीनें दी भली लगदी ऐ छां।
तेरें कुरबान सपाइया, में तेरें सदकै जां ॥

---

4. जिस तरफ 5. हवा 6. छेड़खानी 7. आराम के लिए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्न जननी ऐ तेरी जिसदी तूं कुक्खा जाया,[8]
धन्न भुब्बल[9] उनें गलिएं दी जिनें बडेआया,
धन्न रोजी ऐ, जोआनी गै छड़ा सरमाया,
तूं रमें जींदा, नरोए तेरे कर पैर ते बां ।
तेरे कुरबान सपाइया, में तेरे सदकै जां ।।

★★

8. जिसकी कोख से तूने जन्म लिया 9. धूल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ

मोहन लाल स्पोलिया

जवानी ते रंगीन सोहने[1] नजारे,
उमेदें दी शावा, उमंगें दे लारे,
खिड़े दे न भागें दे चंचल सतारे,
बड़ी शैल ते शुभ लगन ए घड़ी ऐ,
चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ।

सुनो गीत गान्दी मशीनें दी रानी,
जमीनें दी गोदा'च खूएं दा पानी,
ते झुंडै'च[2] हस्सै दी[3] फसलें दी शानी,
कुसै सूरमे दी गै जान्नी चढ़ी[4] ऐ,
चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ।

---

1. सुन्दर 2. घूंघट में 3. हंस रही 4. बरात सजी है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हलाकू ने फी तान जंगै दी छेड़ी,
जे मारू ऐ पैण्डा[5], तां मुश्कल ऐ केड़ी[6],
बदो[7] होर अग्गें ते ठेलो हां बेड़ी,
तुफानेंगी तरना, ए स्हाड़ी अड़ो ऐ,
चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ।

असेंई[8] अज्ज नानक दी वाणी दी सो[9] ऐं,
हिन्दू मुसलमां दी कहानी दी सो ऐ,
असें अज्ज अपनी जवानी दी सो ऐ,
इनें जालमें दी बनानी मड़ी ऐ[10],
चलो साथियो कोल मंजल खड़ी ऐ।।

★★

---

5. सफर 6. कौन सी 7. बढ़ो
8. हमें 9. शपथ 10. कब बनाती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरी फौजिया बरदी

मोहनलाल स्पोलिया

रत्तु रंगी[1], डाडी चंगी, तेरी फौजिया बरदी !

नां रंगै कोई नार बांकड़ी, नां गै कंजक[2] कुआरी,
इस रंगैगी रंगी सकदा कोई नि शैल ललारी,
रंगी गई ऐ, रंग रौंगला, ए तेरी सरदारी,
डाली - डाली होई जा खाली, ए लाली नईं भरदी ।

रत्तु रंगी, डाडी चंगी, तेरी फौजिया बरदी ।

तेरा जोश ते हिम्मत तेरी, तेरा ए बलिदान,
बीर, शिवा, प्रताप ते राना सांगा दा बरदान,
तूं टीपू सुलतान देस दा तूं पृथ्वी चौहान,
काल तेरे'शा[3] थर थर कम्बदा मौत तेरे 'शा डरदी ।

रत्तु रंगी, डाडी चंगी, तेरी फौजिया बरदी ।

---

1. *खून से रंगी हुई* 2. *कन्या* 3. *तुझ से*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गहरी बरदी उप्पर थां-थां लऊ दे लशकारे,
जियां नीलं अम्बर लिछकन लाल-लाल अंगारे,
भारत दे भागें उप्पर आखो जग-जग करदे तारे,
इन्दे बिचा कौमा उप्पर रौग जवानी बरदी ।

रत्तु रंगी, डाडी चंगी, तेरी फौजिया बरदी ।।

तूं कश्मीरी, तूं मदरासी, तूं बंगाली बीर,
तूं जमना दा बगदा धारा, तूं गंगा दा नीर,
डुग्गर ते पंजाब ऐ तेरा, तेरी ऐ कश्मीर,
तेरी बीरता गी अज्ज धरती सौ-सौ बंदन करदी ।

रत्तु रगी, डाडी चंगी, तेरी फौजिया बरदी ।।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए भारत अमर ऐ

मोहनलाल सपोलिया

●

ए भारत अमर ऐ, ए भारत अमर ऐ ।
जबानें ते बीरें ते जोधें दा घर ऐ ।।

ए मंदर, ए मसजिद ते ए गुरदुआरे,
ए गंगा दा पत्तन[1] ते जमना दे धारे,
शलैपें'च[2] न्हाते - धनोचे दे तारे,
ए शहीदें दी लम्मी उमीदें दा वर ऐ ।

ए भारत अमर ऐ, ए भारत अमर ऐ ।

ए परताप, शेवा दी अनखी[3] जवानी,
भक्तसिंह दी अमर उज्जल नशानी,
ए गांधी दी बस्ती ते नानक दी कहानी,
जफर दे ए शेरें दी लम्मी सतर[4] ऐ ।

---

1. घाट 2 सुन्दरता में 3. गर्वीली 4. कितार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए भारत अमर ऐ, ए भारत अमर ऐ ।

ए सूलें दे उप्पर बी चलदा रेआ ऐ,
सदा इन्कलाबें'च पलदा रेआ ऐ,
ए दीया सदा फी बी बलदा रेआ ऐ,
नां बाऊ दा झाका, नां अंधी दा डर ऐ।

ए भारत अमर ऐ, ए भारत अमर ऐ ।।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जै बोल !

यश शर्मा

●

जै बोल जिनें इस धरती पर,
अपना सरबस्स लुटाया ऐ ।
जै बोल जिनें इस देसै दा,
सच्चा सम्मान बदाया[1] ऐ ॥

जै बोल तूं अपने वीरें दी,
रण धीरें दी, रण बांके दी,
जै बोल अमर बलिदानें दी,
जै बोल शिवा परतापै दी ।
जै बोल जिनें हसदे-हसदे,
देसै लई सीस कटाया ऐ ॥

---

1. *चढ़ाया है*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जै बोल जिनें इस धरती पर,
अपना सरबस्स लुटाया ऐ ॥

जै बोल सूरमे सिंगें दी,
मौती नै खेडन-हारें दी ।
जै बोल लड़ाके शेरें दी,
भारत दे राजदुलारें दी ।
जै बोल जिनें लड़दे - मरदे,
जै हिन्दुस्तान गलाया ऐ ॥

जै बोल जिनें इस धरती पर,
अपना सरबस्स लुटाया ऐ ॥

जै बोल जिनें रणभूमि'च,
दुश्मन दे पित्ते गाले[2] न ।
जै बोल जिनें इस धरती पर,
रत्तु दे दिये[3] बाले[4] न ।
जै बोल जिनें सिर दित्ता ऐ,
ते हिन्दुस्तान बचाया ऐ ॥

---

2. हृदय दहला दिए हैं 3. लहू के दीपक 4. जगाए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जै बोल जिनें इस धरती पर,
अपना सरबस्स लुटाया ऐ।
जै बोल जिनें इस देसै दा,
सच्चा सम्मान बदाया ऐ ॥

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूरमें लड़ने गी जा करदे

यश शर्मा

सरहद्दां पार करियै, सूरमें लड़ने गी जा करदे,
माऊ दे लाडले पुत्तर, फर्ज अपना नभा करदे ।।

हठी, कर्मठ, हसमुख, उच्चे लम्मे हौसले आले,
इनें गी मान देसै दा, ए देसै दे न रखवाले ।
कोदी हिम्मत जो आवै सामनै, नजरां मलाई जा,
ओ केड़े'न[1], जो मौती गी, देआ करदे न अज्ज आले[2],
कोई खिड़-खिड़ ऐ हस्सै दा, कोई बंदूक तुनकै[3] दा,
ते किश चंचल सवा आले, ओ दिक्ख सीटी बजा करदे ।।

सरहद्दां पार करियै, सूरमें लड़ने गी जा करदे,
माऊ दे लाडले पुत्तर, फर्ज अपना नभा करदे ।।

---

1. वे कौन हैं 2. आवाज़ें दे रहे हैं 3. तौल रहा है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुसै सिगरट ऐ लाए दा, कोई पीयै दा पानी ऐ,
कोई गिल्लुएं[4] गी दिक्खै दा ते सोचैदा कहानी ऐ।
ओ खबरै[5] ए ऐ सोचै दा, जे ओ बापस निं आई सकेया,
तां ए बन्दूक इस गिल्लू ने, आइयै पुड़छी लैनी ऐ।
करोड़ां देसवासी, इन्दे पिछें न खड़ोते दे,
इनें गी पक्का निश्चा ऐ, जे ओ इक्कले[6] निं जा करदे ॥

सरहद्दां पार करियै सूरमें लड़नें गी जा करदे,
माऊ दे लाडले पुत्तर, फर्ज अपना नभा करदे ॥

जिनें सुत्ते दे शेरें गी जगाया, छेड़ कीती ऐ,
जिनें देसै दी गैरत गी चनौती अज्ज दिती ऐ,
उनें अपने गै पैरें पर कुहाड़ी अज्ज मारी ऐ,
उनें अपनी तबाई जानी - बुज्झी मुल्ल लैती ऐ,
चनौती देने आले बैरियें दा नाश करने गी,
महाताण्डव दे तालें पर, ए मारू गीत गा करदे ॥

सरहद्दां पार करियै, सूरमें लड़ने गी जा करदे,
माऊ दे लाडले पुत्तर, फर्ज अपना नभा करदे ॥

---

4. *नन्हें शिशुयों को* 5. *वह शायद* 6. *अकेले*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए टीपू न, शिवा जी न, गुरु गोबिन्द, अर्जन न,
ए भायें पारसी, हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख, क्रिश्चन न,
ए रणबांके अवध दी संझ, काशी दा सवेरा न,
ए हिन्दुस्तान दा गौरव, उदे चित्तै[7] दी धड़कन न,
इनें देसै दी गैरत गी, बचाना लाज रखनी ऐ,
ओ तां देसै दी मित्ती नैनें-मत्थे तिलक ला करदे।

सरहद्दां पार करियै सूरमें लड़ने गी जा करदे,
माऊ दे लाडले पुत्तर, फर्ज अपना नभा करदे।

★★

---

7. उसके दिल की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निश्चा

चरणसिंह

●

ए धरती मैं इसगी म्हेशां रत्तु 'नैं शंगारां ।
जन्म जन्म थों इयै निश्चा तन-मन-इस तै वारां ।।

देव-लोक दी झांकी इत्थैं
परमेसर दा बासा ।
शिव-शंकर दा ताण्डव इत्थैं
रण-चण्डी दा हासा ।।

ए ओ पुन पवित्तर जित्थैं
राम कृष्ण अवतारे ।
रावण जैसे लक्खां बैरी
कंस दुशासन मारे ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरी-भरी ए धरती सच्चें
अमनै दी ऐ खान।
रामायण दी चर्चा इत्थें
गीता दा ऐ ज्ञान॥

भाग-भरी इस अम्मा दे
पंजताली करोड़'न बच्चे।
जान तली पर धरियै बैठे
बीर सपाई सच्चे॥

इक हत्थै बिच्च फुल्ल सुनाह् के दूऐ हत्थ तलवारां,
ए धरती में इसी म्हेशां रत्तु'नै शंगारां।
जन्म जन्म थों इयै निश्चा तन-मन इस तै वारां॥

ए अमनै दी गंगा जेकर
ए जमना दा देस।
चढ़ा चनाह भी इयै
जिस दे मारू छल्ल पलेस॥

ए गोतम दी गूढ़ समाधी
जे मीरां दा थान।
तां प्रताप दी अनख बी इयै
झांसी दा बलिदान॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिह सूरमें इस दी खातर
मरदे हस्सी हस्सी ।
रण-भूमि बिच कदें कुसै 'नें
पिठ कदें निं दस्सी ।।

अस यारें दे यार आं पक्के
खुट्टी नीत निं साढ़ी ।
पर उस दे अस पक्के बैरी
जो करदा कोई माड़ी ।।

ए इतिहास गुआई दिन्दा गांदा किस्से वारां,
ए धरती में इसगी म्हेशां रत्तु नै शंगारां ।
जन्म जन्म थों इयै निश्चा तन-मन इस'तें वारां ।।

कुस दी हिम्मत जो बन्नें'पर
आइयै मी ललकारै ।
मेरी गैरत, जिगरे गी जो
आइयै अज बङ्गारै ।।

इस पास्सै जो पैर बदन
ओ पैर में बढ़्ढी शोड़ां ।
मैली नजरें जो दिक्खै
ओ अक्ख में कढ़्ढी शोड़ां ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खबरदार ओ अमन द्रोहियो
इस धरती गी निं छेड़ो ।
ए धरती ए मकदे लोरे
हत्थे मौत निं सेह्ड़ो ।।

डरो डरो जे भारत भिरो
बराट रूप निं धारै ।
शिव-शंकर दा डमरू गज्जै
चण्डी रूप सुआरै ।।

डरो डरो जे मकदे लोरे ए बरफानी धारां,
ए धरती में इसगी म्हेशां रत्तु'नें शंगारां ।
जन्म जन्म थों इयै निश्चा तन-मन इस'तै वारां ।।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अज्ज कलम कटारी कर कविया

चरणसिंह

●

फुल्लें दी चर्चा के करनी,
ब्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया !
इक चोट करारी लाने गी ॥

अज्ज रत्त रंगियां रातां 'न,
अज्ज हर इक पर्व ब्याड़ा ऐ ।
अज्ज शेर सूरमे गरजे दे,
कोई आवै जो पलवाड़ा ऐ !
कश्मीर सदा थों स्हाड़ा हा,
कश्मीर सदा गै स्हाड़ा ऐ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मैली नजरें दिक्खग तां,
ओ अक्ख गै कड्डी देनी ऐ ।
बदनीतें जे कोई झांकग बी,
ओ मुण्डी बड्डी देनी ऐ ।
हक्कै तै जीना, मरना बी,
ए रीत ऐ मर्द-मदानें दी ॥
फुल्लें दी चर्चा के करनी,
ब्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया ।
इक चोट करारी लानें गी ॥

हद्द हुन्दी ऐ जरने दी,
कोई हद्दा बाहरा जरदा नईं !
जे पानी सिरा थों चढ़न लगै,
तां कुन मूर्ख जो तरदा नईं ?
जादी ते खतरा बनी जा जे,
तां कुन जो लड़दा-मरदा नईं ?

जाद्दी ऐ गहना मनुखता दा,
गहने दी साम्भ जरूरी ऐ ।
जाद्दी ऐ अनख मनुक्खें दी,
जाद्दी बिन अनख अधूरी ऐ ।
अज्ज लोड़ ऐ साथी देसा गी,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फी इज्जत - मान बचाने दी ।
फुल्लें दी चर्चा के करनी,
व्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया ।
इक चोट करारी लाने गी ॥

रावी दे छल्ल'न मारू अज्ज,
ए व्यासा कहर इक भारी ऐ ।
मचली दी गर्ज चनां दी अज्ज,
जेलम दी लहर कटारी ऐ ।
देसा दी रख्या करने तैं-
अज्ज सोह्‌गा हर नर-नारी ऐ ।

कोई हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख नईं,
अज्ज हर इक हिन्दोस्तानी ऐ ।
सुच्चें दी माला जन झुलदी,
अज्ज जनता होई मस्तानी ए ।
पर, लोड़ अजें बी बाकी ऐ,
ए सुच्ची लड़ी बचाने दी ।
फुल्लें दी चर्चा के करनी,
व्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया ।
इक चोट करारी लाने गी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमजोर होऐ जां हारे दा,
बैरी ते म्हेशां बैरी ऐ ।
मरियै बी बिलसै-छड़कै'दा,
ए सप्प दमूआं जहरी ऐ ।
अजें भलेयां खतरा टलेया नि,
ए जंग अजें नईं ठहरी ऐ ।।

अजें आपसरोखड़ होनें'तै,
असें कोहल खलाड़े भरने 'न ।
देसा दी लाज बचाने तै,
कईं जोर जुलम अजें जरने 'न ।
ए दुनियां सोचै करदी ऐ,
अजें होर बी जोर जमाने दी ।
फुल्लें दी चर्चा के करनी,
ब्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया ।
इक चोट करारी लाने गो ।

ब्हारें दी बारादरिया पर,
फी रौंसें कीकली पानी ऐ ।
रुक्खें दी डाली-डाली पर,
फी कलि-कलि मुस्कानी ऐ
पर रक्त-प्यासी धरती दी,
असें आली प्यास बुझानी ऐ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीहदें दी रत्तू दा आली,
असें भारी कर्ज चुकाना ऐ ।
दुश्मन दे कबजे 'चा आली,
किश लाका[1] असें छुड़ाना ऐ ।
ते ब्हार फिरी गै औनी ऐ[2],
कोई पर्व त्योहार मनाने दी ।
फुल्लें दी चर्चा के करनी,
ब्हारें दे किस्से कित कारी ?
अज्ज कलम कटारी कर कविया,
इक चोट करारी लाने गी ।

★★

1. इलाका 2. बहार फिर ही आनी है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चेतावनी

रामलाल शमा

●

मुह् ताज होए दे हर गल्ला,
आजाद होए तां किस लेखे ।
घर कुल्ले गिरबी पेदे जे,
आबाद होए तां किस लेखे ।।

पिंजरे दे तीले भन्नी ले,
पर उडुन जे कर होआ नईं ।
ओ बोट प्रौनां घड़ियें दा,
बिल्लें गो जिच्चर थोआ नईं[1] ।।

ए जीना खेड सखल्ली नईं,
हर इक्क दुए दा मारू ऐ ।
नईं थार कुते बी लिस्सें दा,
हर इक दुए पर भारू ऐ ।।

---

1. *जब तक हाथ नहीं लगा*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए सागर चाल सृष्टि ऐ,
निक्कें गी बड्डा खन्दा ऐ।
ए आद जुगै दी गाथा ऐ,
ए आद जुगै दा धन्दा ऐ॥

फी सार जेड़ा पनशानै नईं,
ओ आस करै की जीने दी।
जे अमल नईं उपदेसें पर,
ओ याद होए दे किस लेखै॥

मुहताज होए दे हर गल्ला,
आजाद होए तां किस लेखै।
घर कुल्ले गिरबी पेदे जे,
आबाद होए तां किस लेखै॥

गवर्धन पहाड़ चकोन्दे 'न,
इक चिच्ची रली बदाने 'नै।
ए बड्डे हाड़ डकोन्दे 'न,
इक गीटा - गीटा पाने 'नै॥

कुन्न भाखी ओ टटीरी नईं,
जिन्न चुज्जें लेतर ढोता हा।
जद सारें हत्थ बटाया हा,
तां सेतु, बंध खड़ोता हा॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जद अंग नरोए सारें दे,
फी दर दर जाइयें झांकन की।
फी पार समुन्दर शाहें दे,
ए मुन्शी लेखे आंकन की॥

जादीं दी सोहल पनीरी ऐ,
तूं बरगा नईं तां सुक्की जाग[1]।
सब बरना करना मौके दा,
फी बाद होए तां किस लेखें॥

मुह्ताज होए दे हर गल्ला,
आजाद होए तां किस लेखें।
घर कुल्ले गिरबी पेदे जे,
आबाद होए तां किस लेखें॥

★★

---

1. सूख जाएगी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिरख तन्दे गी असें त्रोड़या नईं

रामलाल शर्मा

●

असें ईन मरजादा गी छोड़या नईं ।
हिरख तन्दें गी असें त्रोड़ना नईं ।।

अस न्हेरें'च दीएं गी बालदे रे ।
फेरें - घेरें'च सेधें गी तालदे रे ।।
पत्थर चित्तें गी मोमै ने घालदे रे ।
घा भरे'प भरें गी कोड़या नईं ।।

उच्चे पीर कश्मीरै दा देस भारत ।
दानी शिवी ने बीरें दा देस भारत ।।
मीरां, बुद्ध, कबीरें दा देस भारत ।
बन्नै लाया'प लग्गें गी रोड़ेया नईं ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रबै हसदा - बसदा देस स्हाड़ा ।
ए निं बैर - बरोधें दा बनै खाड़ा ।।
इक बनै तां दुआ निं बनै माड़ा ।
कोई आखै निं खिडें गी जोड़ेया नईं ।।

असें ईन मरजादा गी छोड़या नईं ।
हिरख तन्दें गी असें त्रोड़या नईं ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीत मेरा इकला नईं

वेद 'दीप'

●

ओं[1] कवि आं, हत्थै 'च तलोआर नईं
कान्नी ऐ, जेदे नै,
बड़े सा'बै नै चंगी चाली
तुप्पो[2] तालियै[3]
गबरू सन्नाके[4] शैल अक्खर
एकड़े दा ओकड़े ने जोड़ियै मूण्डा
खडेरी दिन्ना सतरें'च
बे जेलै सतरें पर सतरां
बरोबर छन्दे 'च बज्जो
बचारें दी गति लेइयै

---

1. मैं 2. ढूंढ़कर 3. चुनकर 4. सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरै तालै कन्नै सज्जो
बद्दन लई पौन आपूं
अगड़ियां गै अगड़ियां
सीमा
कलपना दी गी छूने गी
बजोयै
पलटन ऐ कोई
सन्नाके, तगड़े मेरे देसै दे बीरै जोआनें दो
टुरै दी ऐ बरोबर पंक्तालियें'च, कदम मेलो
बरदियें, हत्थयारें नै सज्जी, सजाइयै
बन्ने पर पुजनेई, जेदे पर बार कीता ऐ
कुसै शत्रु दो फौजै नै
अजादी ते,
समें इक दी, नां इक देसै, नां इक मानु दी कहानी ऐ
अजादी लई लड़ी मरना
समुची धरती अन्दर
हर जुगै'च
अनमिथे इतिहासै दे हर मोढ़े उप्पर[5]
जीने लई काह्लो मनुक्खता दो
रेई सांझी नशानी ऐ

गलामी दा कदीमी दौर हा ते
'स्पाटकस'

---

5. मोड़ पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लड़ेया हा इसं गै अजादी लेई
ते अज्जै तगर
लड़दा आवै दा मानु
भाएं रोडेशिया दा काला मानु ऐ
'गोरिला' बितनामी ऐ
अराकी ऐं जां शामी ऐ
जद्दूं गोली लमुम्बे दै कलेजै पार उन्दी ऐ
मेरे गीतें दे छंदे दा कलेजा घाल[6] होई जंदा
नेह्[7] मौके पर मेरे हर अक्खरै दे हत्थै'च
तलवार हुन्दी ऐ
मेरा हर गीत उस बेलै
लोहे दी ढाल होई जंदा
इसं लई मी यकीन ऐ
जे मेरे देसं दी जनता पर
इदे, हक्कें अजादी, इज्जतू पर, लऊऐ परसे पर,
कोई करदै चढ़ाई
गीत मेरा इकला नईं
दुनियां दी सारी दिशाएं 'चा
अमन जमहूरियत दे गीत
इसदी राखी करने लई, मिली
इकै सुरै नै गूंजी पौङ्गे[8]
कवि दे नातै सच पुच्छो तां

---

6. घायल 7. ऐसे 8. गूंज उठेंगे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मी ते अमन प्यारा ऐ
वो एदा अर्थ
शक्ति अग्गें नोना[9],
सामराजी हाकमें दे पैर घोना नईं
असेंगी अमन प्यारा ऐ
छड़े जंगै दे नारे ते
तलेड़ू[10] कायरें मुनसें दा चारा ऐ
जे साढ़े अपने कछ हत्थेयार नईं
ते अपनी शक्ति नईं
ते बामां लोआरना बाऊ'च
कोई देश-भक्ति नईं
जे लड़गे
अपन पैरें पर खड़ोइयै
जम्मियै[11] लड़गे
कुसै बखले दो नईं
बां जनता दी गै थम्मियै लड़गे
जिनें पाई दी ऐ लोटी
उन्दे शा सिक्ख निं मंगदे[12]
ते परखी लेदा जड़ा यार
उस थों भिक्ख निं गंगदे
जड़ा बनजाई लेदा बैरी

---

9. झुकना 10. बुजदिल 11. जमकर
12. सीख नहीं मांगते

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नईं ओदा बसाह खागे
तरोड़ी ऐंठेआं जंजीर जड़ी
मुड़ियै निं पागे,
बचागे ईन, ते लाके छड़ागे अपने जौरै नै
खड़ोगे अपनी जंङें पर, ते टुरगे अपनी टोरै नै
नां ए खेतर, नां ओ खेतर,
मशीन एकी ते नां ओकी
नां ए जनता नां ओ जनता
नां एका गीत नां ओका, गै
इक दुए दा बैरी ऐ
ए खलकत तुप्पै
होने जीने दा रस्ता बचैरी ऐ
क जीवन गीत मुक्कै नईं, क जेदी सीर तुपने ईं
खोज वज्ञानक, करादे, सरिष्टि दा ओ नाढू मुक्कै नईं
परानी रीत मुक्कै नईं
असेईं बैर जंगै नै, ते कन्ने[13] जंग बाजे नै
तबाई लई भयानक घड़े दे
समेयान[14] साजें नै
असें ते जंग लड़नियै क मुढ़ियै जंग नईं होयै
क ऐमनी गी जड़ा खतरा, बनी पौंदा ऐ आए दिन
ओ मुढ़ियै[15] आनी टुक्कै नईं
सदा इतिहास साखी ऐ

---

13. साथ 14. सामान 15. पुनः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क राखी ऐमनी दी करनी
हत्थेयारें बी भाखी ऐ
भाएं भूषण मिगी आखो
ते भाए चन्दबरदाई

जड़ा लड़ेया कई बारीं कंठन संगराम अऊं ऐ हा
अऊंऐं बंकिम हा, ठाकुर हा, ते नजरुल सलाम अऊंऐं हा
तराने फांसी चढ़दे गोए,
उन्दी बाज[16] मेरी हो
कई बारीं लड़ाई'च जेदी नईं लोथ[17] बी थोई
सपाई ओकड़ा लड़ेया कुतै
गुमनाम अऊंऐं हा

अऊं कवि आं, हत्थै'च तलोआर नईं
कान्नी ते ऐ जिसनै
में इतहासा'च कौमें दी लड़ाई लड़दा आ करनां
जे अज्ज बी लोड़[18] ऐ इसदी ?
ए कान्नी तुन्दै अरपण ऐ
जे तलोआरै ई मरोड़ी दराटी बनी सकदी ऐ लोहे दी
तां कान्नी दी तरिखी चुंज बी बन्दूक
अक्खर गोलियां बनियै
बरी सकदे 'न शत्रु पर
लड़ाई दृष्टिकोने दी ऐ
फौजें दी लड़ाई नईं

★★

16. आवाज़ 17. लाश 18. जरूरत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस भारथी

तारा स्मैलपुरी

●

दूरें-पारें
आंड-गुआंडी
दुशमन-बैरी
सज्जन-मित्तर
सारे सुनी लो
अस भारथी–
स्हाड़े मन कमलें साईं कोमल,
स्हाड़े मन कुप्पड़ें साईं बज्जर,
स्हाड़े मन इक शोह दरेया जन
स्हाड़े मन अग्गी दे लोरे,
जुलम-जबर दी तलोआरें दी छामां-छामां पले-पुले दे
मौती दी गोदा खेडे दे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पी बी अक्खीं दे बिच चाह ऐ
स्हाड़े मनै'च मित्तरता ऐ।
अस अमनै दे सच्चे पूजक,
विश्व शांति दे रखवाले,
पर जे गैर कोई ललकारै
मौती नै टकराने आले,
दूरें-पारें
आंड-गोआंडी,
दुशमन-बैरी,
सज्जन मित्तर
सारे सुनी लौ
अस भारथी—

स्हाड़े पैरें दी छेड़ै पर
गासी पर्वत झुकदे जन्दे
अति भयंकर
प्रलयंकर तूफानें दे साह सुकदे जन्दे।
मन्नी लैता अज्ज दुनियां पर
बदल घिरे दे जंगें आले,
मन्नी लैता गासें छाए जुल्ले खूनी रगें आले।
पर, धरती दी रक्षा गीतै
बच्चा-बच्चा डटने आला
इस भूआं दा इक-इक बच्चा
मरियै, पिच्छे हटने आला

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काल घटा दो बिजली आंगू
त्रुट्टो-त्रुट्टो पौने आले
सर्वनाश दे मारू तांडव
खूनी नदिएं न्हौने आले
दूरें-पारें
आंड-गोआंडो
दुशमन-बैरी
सज्जन-मित्तर
सारे सुनी लौ
अस भारती—

अस धरती दे अंग त्रैवै
बैरी ताईं तरसूल गै जानों
साम-धाम यमराज गै समझो
अस हिन्दु आं
सिक्ख बी अस
अस मुसलमान बी
पर ए सारियां गल्लां पिच्छूं
पैह्लें अस आं इक भारथी
स्हाड़े देसै दी हद्दें पर
जो कोई मैला पैर टकाग
छुट चकाए मुल्ल खता दा
मत कोई समझो जींदा जाग
मित्तर बनियें दगा कमा जो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्हाड़ी ग़ैरत गी ललकारै
शब्द-बेदिया बान चलै जो
चित्त करै उसी उस्से थारै
दूरें-पारें
आंड-गोआंडी
दुशमन-बैरी
सज्जन-मित्तर
सारे सुनी लौ
अस भारती—

मित्तरता दे सच्चे मित्तर
शत्तरुता ताईं काल भेयांकर
स्हाड़ी अक्खीं दे शारे पर
महानाश बी थर-थर कम्बै
बड़े-बड़े दा जिगरा सम्बै
पर ए सब होन्दे सोन्दे बी[4]
युगें-युगें थों अमन प्यारा
पंचशील बस स्हाढ़ा नाह्रा
अमन संगधि ने मन भरेया
जंगें कन्ने कोई लाग नईं
लाग जे ऐ तां बस इन्नी गै
अमनै दे कोमल रुक्खै गी[5]

---

4. होते हुए भी 5. पेड़ को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जंगै दे तत्ते लोरें दा सेक नि लग्गै
लामैं दी लूह् झुल्सी जा नि–
इन्ना ते बस जिगरा स्हाड़ा–
पर फी बी जे
जंग बाज कोई
मौतो गी आले मारै[6] दा
स्हाड़ा जोर अजमाना चान्दा
चेता रक्खै[7]
हाड़ बगी जाङ्गे लउयै दे
उस दी बाता लो नि लब्बग
स्हाड़ी तलवारें दियां धारां
चौबी घैंटे बेकरार न
उस दे लउयै ताईं तरेयाइयां[8]
दूरें-पारें
आंड-गोआंडी,
दुशमन-बैरी,
सज्जन मित्तर
सारे सुनी लौ
अस भारथी–

बस्स इन्ना गै परिचय स्हाड़ा—

★★

---

6. आवाजें दे 7. याद रखो 8. प्यासी हैं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए ऐ हिन्दोस्तान

तारा स्मैलपुरी

●

ए ऐ हिन्दोस्तान साथिया ! ए ऐ हिन्दोस्तान ।
चप्पै-चप्पै चढ़ंदे जिसदै लक्ख-लक्ख बलिदान ।।

ए बस्सै पंजाब दी धरती, मनचलें दी धरती ।
देसै उप्पर मरने आले, दिलजलें दी धरती ।।
हसदे हसदे सूली जित्थें शूरबीर चढ़ी जान ।
ए ऐ हिन्दोस्तान साथिया, ए ऐ हिन्दोस्तान ।।

ए बस्सै दा गौढ़-बंगाला, जित्थें होए सुभाश ।
जिस दे कण-कण'च बोलै दा बैरी दा महानाश ।।
पलें-खिनें बिच ईन बनी जा इक मारू तुफान ।
ए ऐ हिन्दोस्तान साथिया ! ए ऐ हिन्दोस्तान ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए दिक्खो झांसी दी धरती, कुरबानी दी धरती,
आन'प[1] लड़ने-मरने आली मरदानी दी धरती ।।
लिश्कन-मिश्कन दो तलोआरीं खूनी हाड़ बगान ।
ए ऐ हिन्दोस्तान साथिया ! ए ऐ हिन्दोस्तान ।।

★★

1. आन पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए बेल्ले रोज नईं औंदे

नरसिंहदेव

वतन जे जान मंगदा ऐ,
अमर बलिदान मंगदा ऐ,
तां तूं कुरबान हो जिंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे।
ए बेल्ले रोज नईं औंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे॥

ए धरती जिस नै सारें गी, सदा ममता दी छां दित्ती,
ह्जारां दुख जरे[1] फी बी कदें मुआं नि सी कित्ती,
इदा[2] करजा चुकाने दे समें हर रोज नईं औंदे।
ए बेल्ले रोज नईं औंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे॥

हिरख इसदा हरइक मानु नै इक जैसा ऐ सुच्चा ऐ,
इदे रिश्ते'च स्वार्थ नईं, बड़ा अनमोल उच्चा ऐ,
इदी इज्जत बदाने दे समें हर रोज नईं औंदे।
ए बेल्ले रोज नईं औंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे॥

---

1. सहे 2. इसका

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बतन दे राखे[3] सोगे होन दुशमन हत्थ नईं पांदा,
तली पर जान जे रक्खन तां फिर कोई नईं टकरांदा,
नां बैरी दा मटाने दे समें हर रोज नईं औंदे ।
ए बेल्ले रोज नईं औंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे ।।

जो देसै हित्त मरदे न सदा लई नां करी जन्दे,
जेड़े समझन अजादी गी, अजादी लई मरी जन्दे,
फरज एका नभाने दे समें हर रोज नईं औंदे,
ए बेल्ले रोज नईं औंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे ।।

वतन जे जान मंगदा ऐ,
अमर बलिदान मंगदा ऐ,
तां तूं कुरबान हो जिंदे, ए बेल्ले रोज नईं औंदे ।

★★

3. रखवाले

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीत

नरसिंहदेव

बदला, रिम-झिम, रिम-झिम लाईयें ऐमें कैं तरसाना ।
कैंत जाई बन्ने पर बैठे,[1] तूं कैं मिगी सताना,
बदला रिम-झिम .....

अज देसै पर संकट, हिरखी गीत अज गान नि हुन्दे,
सोहल कलेजे उप्पर अज्ज बैरी दे हत्थ बझोंदे,
देसै गित्तै[2] हिरखै बी अज्ज पाया केसरी बाना,
बदला रिम-झिम .....

बरना गै जेकर तू अड़ेआ, बर बन्ने पर जाईयें,
लप-लप करदी अग्ग बझाहां जो बैरी नै लाईयें,
कैंत मकी दी अग्गी बिच, तूं इत्थें रस बरसाना,
बदला रिम-झिम .....

---

1. सीमा पर जा बैठे 2. देस के लिए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्हान तेरा में मन्नंङ, जाईयै देग्रां सनेग्रा[3] मेरा,
उठदे बौंदे[4] हर साह मेरा मंगै'दा सुख तेरा,
तुस जित्तो घर ग्रौगे जद में तद् गै[5] सीस गुंदाना,
बदला रिम-झिम .....

जद तक जीना तद तक खुशियां, ईद दसैहरे होने,
रंगलियें सेजें बो मुसकाना, हासे बो परतोने,
मान होऐ नईं दाग्गी ग्रपना, ए दिन मुड़ी नि ग्रौना,

बदला, रिम-झिम, रिम-झिम लाईयं ऐमें कैं तरसाना।
कैंत जाई बन्ने पर बैठे, तूं कैं मिगी सताना॥

**

3. संदेश 4. उठते-बैठते 5. तब ही

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए बेल्ला

बरकत प्हाड़ी

माया - माया मोहनी माया,
सोह्‌ल ज्वानी सुन्दर काया ।
गैरत इज्जत पर बलिहारी,
रीत कदीमी इयै स्हाड़ी ।
अपना फर्ज नभाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दे बोल[1] बोलदे लुच्चे,
झूठ, कुफर तोलदे लुच्चे।
हिरख प्रेम रोलदे लुच्चे,
म्हेंदी रौंगली घोलदे लुच्चे।
इन्दें'ने के जराना ए,
देसें दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

सप्प कुसें दे सज्जन नइयों[2],
बैर-बरोध ए तज्जन नइयों।
थोड़ खरी पर थिड़ ए खुट्टी,
भुक्खे गुण्डे रज्जन नइयों।
कच्चा संग छुड़ाना ऐ,
देसें दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

मित्तर हिरसी हीने खुट्टे,
दोखी बिच कमीन्ने खुट्टे।
ल्हामे, नोहरे मीणे खुट्टे,
आस पराई जोने खुट्टे।
अपना देस बनाना ऐ,
देसें दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

---

1. *अपशब्द* 2. *त्यागते नहीं*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जग्गै दा हित करना ठीक,
उत्तम बुद्धि बड़ी जनीक।
हत्था मंगी लै कोई बेशक,
मत्थे दा नईं कोई शरीक।
चंगा सबक पढ़ाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

अपने अपने कम्में रुज्जो[3],
पीड़ देसै दी सब्बै बुज्जो।
जित्थें बैरी औन लुटेरे,
डांगां सोटे लेइयै पुज्जो।
कन्ना फड़ी[4] नसाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

भोला - भाला अपना देस,
करने एदे दूर कलेश।
सादकी खाने, सादा भेस,
सर्व सुखै दा ए सन्देश।
बड्डे दा फरमाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ।
ए बल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

---

3. काम में ठट जाओ 4. कान से पकड़कर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन्द परौनी रज्जी लानी,
देस - सेवा बड्डी करसानी।
मुलखै पर कुरबान ज्वानी,
दुद्द - दुद्द ते पानी - पानी।
मां दा कर्ज मुकाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

आखर तज्जना ए संसार,
दिलबर मौजां ऐश बहार।
तोड़ नि चढ़दे गर्ब हंकार,
फलदा-फुलदा हिरख-प्यार।
प्हाड़ी ठीक गलाना ऐ,
देसै दा मान बदाना ऐ।
ए बेल्ला अति सुहाना ऐ,
असें अग्गें बद्दे जाना ऐ।

**

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डोगरी गीत

दुर्गादत्त शास्त्री

देसा दा मान बदाना ऐ, असें इसगी सुरग बनाना ऐ ।
ए धनी सदा गुलजारें दा, बारें दा, रौंसली घारें दा,
प्हाड़ें दा, शैल मदानें दा, झीलें नदियें ते फुहारें दा.
ए मन्दर, चर्च, मसीतें नै, गुरद्वारें नै ए सज्जे दा,
सिद्धें पीरें तै जोधें दा, गुरुऐं दा तै अवतारें दा,
ए दीया प्यार महब्बता दा, असें इसगी सदा जगाना ऐ ।

ए देस बगीचा दुनियां दा ए सज्जनें दे मन भाना ऐ,
ए बाग सबनै फुल्लें दा, गुलदस्ता सर्व सुहाना ऐ,
ए एमनी दा भाईचारे दा, ए हरया-भरया खेतर ऐ,
अस जागनेआं, असें चोरें शा बागा गी सदा बचाना ऐ,
हुन बीर समाह्लन सीमा गी असें दूना नाज उगाना ऐ,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए मां अस इसदे पुत्तर आं, अस इसदी गोदा खेडु आं[1],
अस सारे इक्को मिक्को आं[2], किश निक्के आं किश बड्डे आं,
अस सब प्रेम प्यारे आं, बैरी पर तेज कटारे आं,
अस आले भोले भोलें नै, डींगे नै अत्त तरेड्डे आं,
अस इसदे चन्न तै तारे आं, असें इसगी चमकाना ऐ ।

इस धरती-अम्बर दा, इसदे कण-कण दा करजा साढ़े[3] पर,
वीरें दा मामें गिल्लुएं तै, सतवन्तिएं दा ऋण साढ़े पर,
जिनें जिंद जवानी तें सब किश, हस्सी-हस्सी इसगी दित्ता,
ऊंदे बब्बें भैण भराएं दा, उनें सबनें दा ऋन साढ़े पर,
ए बेल्ला करज चुकाने दा, असें उंदा करज चकाना ऐ ।

मां मंगी लै जे मंगनी एं, सब राज दुलारे तेरे न,
सिर मंगी लै धन मंगी लै, इदे तन मन धन सब तेरे न,
तूं सर्व सुहागन सुख भागन, सब तेरे ए आज्ञाकारी,
पुत्तर हमीद जे त्यागी जे, रणधीर वीर सब तेरे न,
तूं जनम दायनी शेरें दी, जसवन्ती तुगी बनाना ऐ ।

★★

---

1. खेले हैं 2. हम सब एक हैं 3. हम पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्हल सुरत कर !

बालकृष्ण 'चंचल' उधमपुरी

सम्हल सुरत कर देसा, उट्ठी खड़ो,
मनै बिच गै अपनै तूं कुड़दा निं रओ ।

जड़े कल्ल बत्ता[1] हे साथो बतेरे[2],
तूं अग्गें हा, ओ सारे पिच्छें हे तेरे ।
तुगी कियां उड़ा ने लैता दबाई,
गया संग अगड़ा, न तो[3] सुरत आई ।
ओ बेल्ला-सुहामां तो छुड़ेया खंजाई,
तूं बीते दिनैंगी सिमरदा निं रओ,

सम्हल सुरतकर देसा, उट्ठी खड़ो,
मनै बिच गै अपनै तूं कुड़दा निं रओ ।

---

1. *रास्ते में* 2. *बहुत से* 3. *तुझे*

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरा मान - गौरव ऐ देसें'च हुन बी,
तुगी चंगा मिथदे बदेसें'च हुन बी,
तेरे बोर बांकें दी चरचा ऐ सारें ।
पापी गी हुंकार जिन्दी बंगारें[4] ।
तूं ब्हादर, दलाबर हा, ईना दा पक्का,
तुगी अपने रूपै दा की नि रेआ थओ ?

सम्हल सुरत कर देसा, उट्ठी खड़ो,
मनै बिच गै अपनै तूं कुड़दा नि रओ ।

अजादी दी लो लग्गै करदी ऐ प्यारी,
बिपता दे ध्याड़ें दी गई निग्गोसारी ।
गलामी दे बन्धन तूं भन्नी टकाए,
ते भाग अपने मन्दे तूं बन्नी टकाए ।
तेरे चमकने दा समां हुन ए आया,
मिटें करदा न्हेरा, ते हस्सै दी लो ।

सम्हल सुरत कर देसा, उट्ठी खड़ो,
मनै बिच गै अपनै तूं कुड़दा नि रओ ।

समां फी नि औना, नि इसगी गोआ,
परत बिन्द पासा, तेरा चक्क जा,
तूं नाजें दा घर, धनी हा तूं शाह,
भला भुक्ख तंगी तुगी की सता ?
ते धरती ते अम्बर न शारे करें'दे,
बदलदे समें'ने बदलना ऐ तो ।

सम्हल सुरत कर देसा, उट्ठी खड़ो,
मनै बिच गै अपनै तूं कुड़दा नि रओ ।

★★

---

4. ललकार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्द

राम लाल पपीहा

●

मरने कोला पिच्छै नस्सन, ओ मानु की जम्मे दे ।
देसै ताईं जिन्द गवान्दे, ब्हादर मानु मन्ने दे ।।
भुल्ली जन्दे जेड़े भएड़ु दुद्द माऊ दा पीते दे ।
बैरी पत्त तोआरन जिन्दी, ओठ फिरी बी सीते दे ।।
पिछली कोठी बड़ियै रोंन्दे लैई दुपट्टे रन्नें दे ।

मरने कोला पिच्छै नस्सन ओ मानु की जम्मे दे ।
देसै ताईं जिन्द गवान्दे ब्हादर मानु मन्ने दे ।।

बहन - भरायें कन्ने जिन्दे, थुब्बड़ रौन्दे सुज्जे दे ।
सप्पें आंगू बिस घोलदे बहसें अन्दर रुज्जे दे ।।
कम्म दिक्खियै जिन्द त्रुट्टै, सिरें मनासें बन्नें दे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मरने कोला पिच्छै नस्सन ग्रो मानु की जम्मे दे ।
देसै ताईं जिन्द गवान्दे ब्हादुर मानु मन्नें दे ।।

इस देसै दी धरती उप्पर डुलदा लऊ दलेरें दा ।
बिच कतार्बे नां लखोन्दा बड्डे बब्बर शेरें दा ।।
सीस तली पर लैइयै टुरदे, देस जिनें न थम्मे दे ।

मरने कोला पिच्छै नस्सन ग्रो मानु की जम्मे दे ।
देसै ताईं जिन्द गवान्दे ब्हादुर मानु मन्नें दे ।।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ललकार !

सोहनलाल 'मित्तर'

●

डोगरे देसै दे बासी आं सारे,
सूरमे बांकड़े अल्ल ऐ स्हाड़ी ।
अपनी धरती'ने प्यार ऐ असेंगी,
खुशी'ने गान्ने आं महमां अस स्हाड़ी ।।

बड़कें दे झंडे न गासा'च झुल्लैदे,
दुनिया ने भाखे न सुच्चे बलवान ।
प्राणें'शा प्यारा ऐ ईन्ना दा जीना,
इतिहास बी करदा ऐ स्हाड़ा बखान ।।

सिद्दा स्वातम ऐ, कपट नि जानेया,
जिदां नरोइयां न फुल्लें समान ।
सैलियें धारें'च गान गतारां,
चलदिया बाऊ गी थम्मन - थमान ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यारें दी यारी दे पक्के विश्वासी ग्रां,
कपटी दे कपटें गी करने ग्रां चूर ।
सच्चै दी कंडी'च बोलें गी तोलनें,
पापें दे शौरें'शा रौहन्ने ग्रां दूर ।।

सादा गै खन्ने ग्रां, सादा गै लान्ने ग्रां,
सादगी कन्ने ऐ ग्रसेंगी[1] प्यार ।
सच्चै दे सौदे दे गाहक ग्रस पक्के ग्रां,
सदा सन्दोखी ग्रां, यारें दे यार ।।

कुसै बी गल्ला ग्रस पिच्छे निं दूएंशा[2],
मैहनती उद्दमी चतर चनार ।
मौती दे छल्लें दे तारू जनीक ग्रां,
भाखा ग्रसें ऐ रुग्रार ते पार ।।

★★

---

1. हमें 2. दूसरों से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुग-जुग दीप जलै !

सुतीक्ष्णकुमार 'आनन्दम्'

●

जुग जुग दीप जलै !
नमीं चेतना दी ए जोती, भारत मेरा ऐ,
सुच्चै अमनै दा ए मोती, भारत मेरा ऐ ।
इस जोती दा ए सूरज रोज नमां निकलै ।।
जुग जुगे दीप जलै !

अपनी रूप जुआनी इस पर बीरो बलिहारो,
ए गैरत दा मन्दर इत्थें, प्रेम-प्रीत उपहारो ।
इसदी लोई दी गरमी नै पाप - ताप पिघलै ।।
जुग जुग दीप जलै !!

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरे भरे ए जाड़ ते जंगल, पर्वत गगन चढ़े,
अनखी गबरू इस धरती दे, सच्चे मुनस जड़े,
जिन्दा नां गै सुनियै बैरी दा सब मान गलै ।।
जुग जुग दीप जलै !!

कईं जाबर ते धाड़ू इसदी मित्ती बिच रले,
जोर जुल्म दे रेले आए, इसने दले मले ।
इस धरती दी महमा सुच्ची, कुसै ने नईं रलै ।।
जुग जुग दीप जलै !!

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कश्मीर

आर० सी० प्रसादसिंह

ओ कश्मीर ! तुम्हारी सीमा पर जो आंचल फैला है ।
वह भारत - माता का पावन केसरिया मटमैला है ॥
सावधान ! कोई हत्यारा उस पर हाथ बढ़ाये ना ।
उसपर किसी लुटेरे की बदनाम नजर लग जाये ना ॥
अगर किसी ने छेड़ दिया, तो हम - सा कोई बुरा नहीं ।
पांव बढ़ाया नहीं कि उसका मस्तक धड़से उड़ा नहीं ॥
फिर तो मुंह मत बन्द करे जग हिंसा के आरोपों से ।
गरजेंगी बन्दूकें, ज्वाला बरसेंगी फिर तोपों से ॥
फिर जो होना होगा, होगा, विजय हमारी निश्चित है ।
'सत्यमेव जयते' का शुभ आदर्श पुराना परिचित है ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्य - अहिंसा के धोखे में कोई अब रह जाये ना ।
भारत - माता के कश्मीरी आंचल से टकराये ना ।।
कान खोल कर सुन ले दुनिया, बात बनी उलजाये ना ।
जनता ने जो किया फैसला, उसको अब ठुकराये ना ।।
भारत का अविभाज्य अंग है, बार - बार दुहराना क्या ।
गाये हुए गीत को साथी, बार - बार फिर गाना क्या ।।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पावन भूमि

सव्यसाची

●

तुम नफ़रत के अंकुर मिट्टी में जमा रहे,
धरती पर अन्तर की दीवार उठाते हो ।
खंजर से आज़ादी की जड़ को काट रहे,
मुसकाते गुलशन में तूफ़ान बुलाते हो ।।

यह सारे जहां से अच्छा मेरा हिन्दुस्तां,
अकबर, अशोक की इसमें जगह बराबर है ।
जो राम - रहीम सभी को इज्जत देता है,
अल्लाह-ईश्वर की जिसमें सदा सदारत है ।।

हम नयी रोशनी के जागरूक पहरुये हैं,
तुम हमें कभी गुमराह नहीं कर पाओगे ।
जब आज़ादी का जनता शोर मचायेगी,
तुम जन-विप्लव की लपटों में जल जाओगे ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तानाशाही से कुचला अपनी जनता को,
अब गुलशन पर मतलब की घात लगाते हो।
पीड़ा - उत्पीड़न से भरकर अपना आंगन,
तानाशाही में फूलों को दफनाते हो ॥

यह दीन ईलाही की मेरी मेरी प्यारी धरती,
इसमें कबीर के दोहे गाये जाते हैं ।
जायसी-रहीम समाये हैं इस मिट्टी में,
स्वर तानसेन के अम्बर में मुसकाते हैं ॥

सूफ़ी सन्तों की, दारा की पावन भूमि,
जहां कर्णवती की राखी बांधी जाती है।
सर्वस्व हुमांयू कर देते बलिदान यहां,
उस्मान - शेरवानी को रूह हर्षाती है ॥

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश की जय

शेरजंग गर्ग

●

बोल रे मन स्वाभिमानी,
देश की जय बोल ।
देख, दी किसने चुनौती
कौन तुझ को छेड़ता है,
कौन तेरी राह में
बारूद फिर रखने चला है ?
कर उसी का शीशमर्दन
पोल उसकी खोल ।
देश की जय बोल ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आग पानी में लगा दे
युद्ध की वाणी गुंजा दे
देश ने तुझ को पुकारा
देश का परिचय नया दे
देश पर कुर्बान हो जा

देश है अनमोल
देश की जय बोल ॥

उठ अन्धेरे को कुचल दे
यह परीक्षा की घड़ी है
देश की मिट्टी, हरेक
बलिदान से ज्यादा बड़ी है
फिर नया इतिहास लिख दे

फिर नया भूगोल ।
देश की जय बोल ॥

**

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलो आरती हम उतारें वतन की !

मोहन निराश

●

यहीं जन्म पाया, यहीं पर जवानी,
यहीं प्राण पाये, यहीं जिन्दगानी ।
पिया दूध जो भर यहीं, अन्न खाया,
यहीं दिन बिताये, निशायें सुहानी !

चलो आज बारी हमारी है आई !
चलो मूर्ति हम तुम संवारे वतन की ।
चलो आरती हम उतारें वतन की !

यह देखो सुहागन की बिंदिया महकती !
यह देखो, यह दुल्हन की मेंहदी दहकती ।
यह देखो, यह कागा अटारी पै गाता,
कहानी सुनाते है मैना चहकती !

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी अंगना पै है तूफान छाया !
चलो द्वार देहरी बुहारें वतन की !
चलो आरती हम उतारें वतन की !

यहीं देव जन्मे, यहीं वेद बोले,
महावीर ने नभ के तेवर टटोले,
यहीं बुद्ध के रूप में शांति उतरी,
यहीं सूफ़ियों ने हृदय नैन खोले;

इसी शान को अब चुनौती है मिली,
दिखाओ बढ़ा के कटारें वतन की ।
चलो आरती हम उतारें वतन की !

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जय वीरों की जन्म भूमि

शकुन्तला सेठ

●

जय वीरों की जन्म भूमि,
जय भारत मेरे देश महान् !
जग के कण कण में गुंजित हैं,
तेरे आज विजय के गान ।

मानवता की प्रथम प्रस्विनी,
सृष्टि का अभिनव शृंगार !
तप से सुनियन्त्रित बल - तेरा–
भोग विभव में अतुलित त्याग ।

उषा की अरुणिम आभा में–
कर्मों का रस ढुलका करता ।
सन्ध्या की कुंकुम रोली में,
शान्ति सुधा का झरना झरता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिमगिरि की ये शैल श्रेणियां,
कहती तव गौरव की गाथा ।
धीर मन्द्र गम्भीर स्वरों में,
जलधि है जय घोष सुनाता ।

झूम झूम मतवाले बादल–
हैं चरणों का वन्दन करते
सोना चाँदी हीरे मोती,
खलियानों में तेरे भरते ।

भोला बचपन मुस्काता है,
यौवन करे जगत् का रक्षण ।
यहां ज्ञान से भरा बुढ़ापा,
मानव मन का मेटे विभ्रम ।

गंगा यमुना की धाराएं,
कहती हैं यह अमर कहानी–
जीवन का सम्मान बचाने,
यहां हुई बलिदान जवानी ।

है यही ऋषियों की भूमि,
जननी है यह राम कृष्ण की ।
यहीं जन्म पाया गौतम ने,
यहीं हुए थे वीर शिवा जी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब भी इस पावन धरती को–
किसी कुटिल ने छूना चाहा ।
फनिधर की डाढ़ों में आकर–
जीवन का रस पीना चाहा ।

तभी उतर आये हैं रण में,
सजग पहरुए इस के सारे ।
मातृभूमि की आन बचाने–
लाल हुए हैं तेज दुधारे ।

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयान-गान

पृथ्वीनाथ मधुप

●

बांध कफन हम निकले सिर पर, सिंहो की सन्तान,
अपनी जान लुटा कर तेरी रख लेंगे हम आन ।
प्यारे हिन्दोस्तान !!

हम चण्डी के आराधक हैं, परम भक्त प्रलयंकर के ।
कौन आसुरीशक्ति कि जीतो जो हम से है टक्कर ले ?
हरदम अपने ओठों पर हैं खेले पौरुष - गान ।
प्यारे हिन्दोस्तान !!

अन्यायी के लिए हमीं हैं पांचजन्य का घोष !
गांडीवों से प्रकट हुआ है सदा हमारा रोष !
धर्म - युद्ध में सदा विजय ने दिया हमें सम्मान ।
प्यारे हिन्दोस्तान !!

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय - हृदय में व्याप्त हमारे गीता का सन्देश,
"आत्मा अमर रहा करती है मृत्यु बदलना वेष"।
हम दधीचि हैं वज्र बनेंगे, हंस - हंस देंगे प्राण !
प्यारे हिन्दोस्तान !!

तू ही तन, मन, धन, जीवन औ' तू ही स्वर्ग हमारा ।
तुम पर हो लक्ष्मी, सुभाष ने अपना सब कुछ वारा,
परम कर्मयोगी हे पावन ! चिर सुशान्ति आह्वान ।
प्यारे हिन्दोस्तान !!

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जागता हुआ केसरी

बलजिन्नाथ पण्डित

●

खोलता पलकें, खड़ा अंगडाइयां लेता शनैः ।
दीर्घ निद्रा के अनन्तर जागता है केसरी ।।

नींद में इस को सताया नीच पशुओं ने बहुत ।
फिर से अपनी शान अब दिखला रहा है केसरी ।।

था कभी चिर जागृति में युग-युगान्तर सावधान ।
और करता त्राण था यह सद्गुणों का विश्व में ।।

ज्ञान को विज्ञान की दर्शन की और सद्धर्म की ।
कल्याण की भी दिव्य ज्योति था जगाता विश्व में ।।

कष्ट जब इसने निवारे उलझनें जब शान्त कीं ।
जीव गण को जब दिखाई सरनि चिर कल्याण की ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो गया निश्चिन्त और निःशङ्क जब यह इस तरह।
सो गया आनन्द की निद्रा में तब यह केसरी ॥

युग इसी कल्याण की निद्रा में गुज़रे जब बहुत।
नीच पशुओं ने इसे बेहोश सा जाना पड़ा ॥

नींद में इसको कुचलने लूटने आए सभी।
खूब कुचला खूब लूटा खूब रौन्दा तब इसे ॥

शूकरों स्यारों मृगों और भेड़ियों ने जब इसे।
लूटा बहुत रौन्दा बहुत तो नींद इसकी खुल गई ॥

नींद से जगते हुए पर आक्रमण करने लगे।
मार खाकर गिर गए जागा है अब तो केसरी ॥

सञ्चार करने लग गई है चेतना नव देह में।
हैं दस्युगण पड़ने लगे जीवन के अब सन्देह में ॥

जीव गण फिर से परम कल्याण पाएंगे तभी।
पूर्णता से शक्ति-सञ्चय कर चुके जब केसरी ॥

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्वंस और सृजन

दुर्गादत्त शास्त्री

ध्वंस अपने तेज शस्त्रों से सुसज्जित दन-दनाया,
मैं चला रे सृजन ! तेरी सृष्टि का करने सफाया ।
देखना है किस तरह तू जाल से मेरे बचेगा ?
भस्म कर दूंगा मैं तेरी संवरती हंसती सी काया ।

देख पैटन टैंक, सैवरजेट और नापाम गोले,
वे मेरे साथी प्रलय के, ये मुजाहिद हाथ गोले,
ये तुझे वीरान करदेंगे, मिटा देंगे समझ ले,
तेरी हरियाली जलेगी औ' उठेंगे लाल शोले !

मैं तेरी दुनियां में ऐसी आग इक बरपा करूंगा,
खून के दरिया बहेंगे, ऐसी इक रचना रचूंगा,
तू मुझे कश्मीर से महरूम रखना चाहता है,
मैं तुझे दिल्ली से भी लाचार औ' बेबस करूंगा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे बन्धु ! सृजन बोला स्वप्न तेरा छलभरा है,
देख तू मेरी प्रगति को द्वेष से जल जल मरा है,
मैं तो इक, वट वृक्ष हूं सब के लिये छांव मेरी,
एक ऐसा दीप हूं, जो लोक-हित तिल-तिल जला है।

ठीक तो यह था कि तू मेरे हृदय का हार होता,
मेरा सुख-दुख तेरा सुख-दुख, मरन-जीवन एक होता,
चाहता हूं अब भी तेरा हित अनुज ! पर क्या करूं मैं !
नीच के पाले पड़ा तू मृत्यु के विष-बीज बोता।

यह तेरा भ्रम है कि मैं निःशक्त हूं औ' तू बली है,
हां, यह सच है, मैं सरल हूं तू तेरा साथी छली है,
पर जरा इतिहास पढ़ले ! अन्त छल का क्या हुआ है।
मत कहीं कहना पड़े—हा, होनी होकर हो टली है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वतन

नरसिंह सहाय शौक़

जां का सदक़ा दे रहे हैं जां निसाराने वतन
या शहादत पा रहे हैं सर फरोशाने वतन

इस वतन के इत्तहादो सालमियत[1] के लिए
सर हथेली पर लिए बैठे जवानाने वतन

हमने साबित कर दिया है जान की बाजी लगा
यूं लड़ा करते हैं दुश्मन से मुहिब्बाने वतन[2]

हम अदू[3] की गोलियों के डर से झुक सकते नहीं
सफ शिकन हैं हम रहे और हमसे है शाने वतन

हामिये अम्नो अमां हैं हक़ परस्ती पर निसार
मरकज़े सद फ़ंज है अपना गुलिस्ताने वतन

वो पिछाड़ेंगे अदू को हर क़दम पर बार-बार
'शौक़' जब आगे बढ़ेंगे नौनिहालाने वतन

---

1. अखण्डता 2. देश भक्त 3. शत्रु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामूसे वतन की ख़ातिर !

तालिब एमनाबादी

जंग की धमकियों से उक्ता कर
हम भी एलाने जंग कर देंगे
अम्न के दुश्मनों पर ए तालिब
अर्साए ज़ीस्त तंग कर देंगे

तुझ को ऐ दोस्त मुबारिक हो सिपाही होना
मनचले लड़ते हैं नामूसे वतन[1] की ख़ातिर
तुझ को तहज़ीब बचाने का जतन करना है
तुझ को लड़ना है इसी सहने चमन की ख़ातिर

---

1. ग़ैरत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे अज़ीम वतन के दलेर बेटों ने
वतन के नाम पै मरना अज़ल से सीखा है
उन्होंने सीखा है दुनिया में अम्न से जीना
अदू पै वार भी करना अज़ल से सीखा है

ऐ वतन, ये तेरे जांबाज सिपाही बेटे
तेरी सरहद तेरी तौक़ीर [2] के रखवाले हैं
तेरे अदना से इशारे पै उमड आएंगे
तेरी गोदी के हैं ये लाल, तेरे पाले हैं

★★

2. सम्मान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरी अज़मत की क़सम

महेन्द्र रैणा

●

तेरे क़दमों पै सदा ऐ मादरे हिन्दोस्तां
जिस्मो जां से जो गरां है ज़िन्दगानी भी निसार
तेरी अज़मत की क़सम ये साफ़ कह देते हैं हम
तुझ पै मरना है यक़ीनन बाइसे[1] सद इफ़्तिख़ार[2]

तेरा तहज़ीबो तमद्दुन है बुलंदी की मिसाल
तेरा फ़िक्रो फ़लसफ़ा है नूरे चश्मे काएनात[3]
अम्न का परचम लिए सरख़म कराए हैं हरीफ़
वक़्त आया तो तशद्दुद से[4] भी समझा दी है बात

---

1. कारण 2. गर्व 3. ब्रह्माण्ड 4. सख्ती से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कितने ही चंगेज़ आए, कितने ही दुश्मन उठे
तेरे आगे सब को आख़िर मुंह की खाना ही पड़ी
अज़्म का तूफां लिए हम मसले सैले बेकरां
मौत से तारीक़तर की दुश्मनों की हर घड़ी

आज जब हम कर रहे थे मिल के तामीरे हयात
कर रहे थे जब कि हम सब एहतिमासे[5] नौबहार
अर्ज़े पाकिस्तां से आए आमरीयत के ग़ुलाम[6]
ताकि फैला दें हमारे मुल्क में त्रो इंतिशार[7]

किस में हिम्मत है जो डाले हम पै ज़हरीली निगाह
रौंद दे तक़दीसे गुलशन, है भला किसकी मजाल
अम्न का परचम लिए हर गाम बढ़ते जायेंगे
और गिराएंगे अदू पर बारिशे क़हरो जलाल

अज़मते हिन्दोस्तां तेरी क़सम मर जायेंगे
हर्फ़ लेकिन तुझ पै आजाए ये मुम्किन ही नहीं
दीनो ईमां आबरू इज्ज़त सभी तुझ पर निसार
इस पै भी कोई सितम ढाए ये मुम्किन ही नहीं

ऐ मेरी जाने बहारां, ए मेरे हिन्दोस्तां
देके हम अपना लहू करलेंगे तज़ईने[8] बहार
जो कोई भी डाले तेरे गुलशनों पर नज़रे बद[9]
उस पै रौशन दिन भी करलेंगे यक़ीनन तीरोतार[10]

★★

---

5. प्रयोजन 6. अधिनायकता के दास 7. गड़बड़
8. संवारना 9. कुदृष्टि 10. अंधकारमय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वतन के नौजवानों के नाम !

अर्श सहबाई

●

आबरु - ए - ज़िन्दगी का बांकपन ख़तरे में है
फूल ख़तरे में है फूलों की फबन ख़तरे में है
बे तरह रंगीनी - ए - सर्वो समन ख़तरे में है

जो वतन पर हाथ उठे उसको झटक कर तोड़ दो
देखते क्या हो अजल से उसका रिश्ता जोड़ दो

हर क़दम पर अज़्मो हिम्मत के फ़साने छेड़ दो
अपनी क़ुव्वत अपनी ताक़त के फ़साने छेड़ दो
दौरे माज़ी की शुजाअत[1] के फ़साने छेड़ दो

वीर राणा और टीपू बन के उठ्ठो जोश से
जो भी ललकारे उसे बेगाना कर दो होश से

---

1. बहादुरी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहम हो जिसको कोई उसका तकब्बुर[2] तोड़ दो
मब्तिला[3] हो जो'म[4] में कोई अगर झंझोड़ दो
वक़्त का फ़र्मान है हालात का रुख़ मोड़ दो

जान रख कर तुम हथेली पर चलो मैदान में
फ़र्क कुछ आने न पाये इस वतन की आन में

अज़्मे नौ लेकर बढ़ो और बढ़के धावा बोल दो
खोल दो दुश्मन पे तोपों के दहाने खोल दो
जो भी आए सामने मट्टी में उसको रोल दो

क्या सज़ा देनी है उसको ये बख़ूबी सोच लो
देश के हर इक अदू की बोटी - बोटी नोच लो

ख़ाक में रख दो मिलाकर हर नई तद्बीर को
ख़ाब कर दो उसके हर इक ख़ाब की ता'बीर को
चश्मे बदसे जो भी देखे जन्नते कश्मीर को

ऐसे बे - ईमान, बे - ग़ैरत की आंखें फोड़ दो
पांव के नीचे कुचल कर बहरे इबरत छोड़ दो

★★

---

2. अभिमान 3. फंसा हुआ 4. घमंड

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

आबिद मुनावरी

●

हाथ में लेकर तिरंगा आज हर पीरो जवां[1]
कारवां दर कारवां मंज़िल की जानिब[2] है रवां
गूंज गूंज उठे हैं इस ना'रा से सातों आसमां

हम मुहाफ़िज़[3] हैं तेरे ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

हम अजल से[4] खेलते आये हैं अपनी जान पर
हम हमेशा मौत से लड़ते रहे हैं बे - खतर
हर मुहाज़े ज़िन्दगी पर हम रहे हैं कामरां[5]

हम मुहाफ़िज़ हैं तेरे ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

---

1. बूढ़े तथा जवान 2. लक्ष्य की ओर 3. रक्षक
4. अनादिकाल से 5. सफल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम हैं वो इन्सां जो मर मिटते हैं इन्सां के लिए
मौत का पैग़ाम बन जाते हैं शैतां के लिए
अपना हर इक फ़े'ल[6] है इन्सानियत का तर्जुमां

हम मुहाफ़िज़ हैं तेरे ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

किस में हिम्मत चश्मेबद से देखे जो तेरी तरफ़
किस में जुर्रत चश्मेबद से देखे जो तेरी तरफ़
कह रहा है ये बुलन्द आवाज़ में हर नौजवां

हम मुहाफ़िज़ हैं तेरे ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

हमने लद्दाख़ और नेफ़ा में दिखाए वो कमाल
आज तक तारीख़ में मिलती नहीं जिन की मिसाल
मुद्दतों दुहराएगी दुनिया हमारी दास्तां

हम मुहाफ़िज़ हैं तेरे ऐ मादरे हिन्दोस्तां

**

6. काम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरहद के मुहाफ़िज़ !

विजय सुमन

●

सरहद के मुहाफ़िज़ कहते हैं
जो सरहद ही पर रहते हैं
अभी और भी आगे बढ़ना है
दुश्मन से डट कर लड़ना है

अपने संग लाखों साथी हैं
अभी और भी पीछे बाक़ी हैं
इस महफ़िल में कोई रिन्द नहीं
सब पीरे मु'ग़ां सब साक़ी हैं

अभी और नशा भी चढ़ना है
दुश्मन से डटकर लड़ना है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये हिन्द अपना कश्मीर अपनी
ये जन्नत की तस्वीर अपनी
अपना ही अक्स है ये धरती
अब यही तो है तक़दीर अपनी

इस नक़्श को और उभरना है
दुश्मन से डटकर लड़ना है

अभी और सितारे टूटेंगे
अभी और भी गोले छूटेंगे
हिन्दु, सिख, मुस्लिम, ईसाई
वो कुफ्र की महफ़िल लूटेंगे

इस तौर से और निखरना है
दुश्मन से डट कर लड़ना है

अभी मौत से हम टकरायेंगे
अभी और भी तूफ़ां आयेंगे
वो मै - ख़ाने वो सनम - कदे
फिर न पहचाने जायेंगे

अभी अंगारों से गुजरना है
दुश्मन से डटकर लड़ना है

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

ज़ैड सैमी

●

ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

हम को हिमाला की क़सम
गंगा व जमना की क़सम

तुझ पर निछावर अपनी जां
ऐ मादरे हिन्दोस्तां

तन, मन व धन तेरे लिए
हर फिक्रो फ़न तेरे लिए

ऊंचा रहे तेरा निशां
ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरे तक़दुस के लिए
दे देंगे जां हंसते हुए

अपनी तो है तू जाने जां
ऐ मादरे हिन्दोस्तां !

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम एक रहेंगे !

कुमार ज्योतीश्वर पथिक

●

हर दौर में हर हाल में हक़ बात कहेंगे
हम एक थे हम एक हैं हम एक रहेंगे

हर नस्ल की हर रंग की ये प्यारी ज़मीं है
फ़िरदौसे तख़य्युल[1] में भी ये बात नहीं है
हम भारती है अम्न के शैदाई भी हैं हम
सहबाये रवादारी के सहबाई भी हैं हम

दुश्मन के हर इक वार को सीने पे सहेंगे
हम एक थे हम एक हैं हम एक रहेंगे

★★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ललितकला, संस्कृति व साहित्य अकादमी जम्मू व कश्मीर, जम्मू ।